वर्ष 25 | अंक 3 | अक्टूबर, 2023
ISSN No. 2582-4546
₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

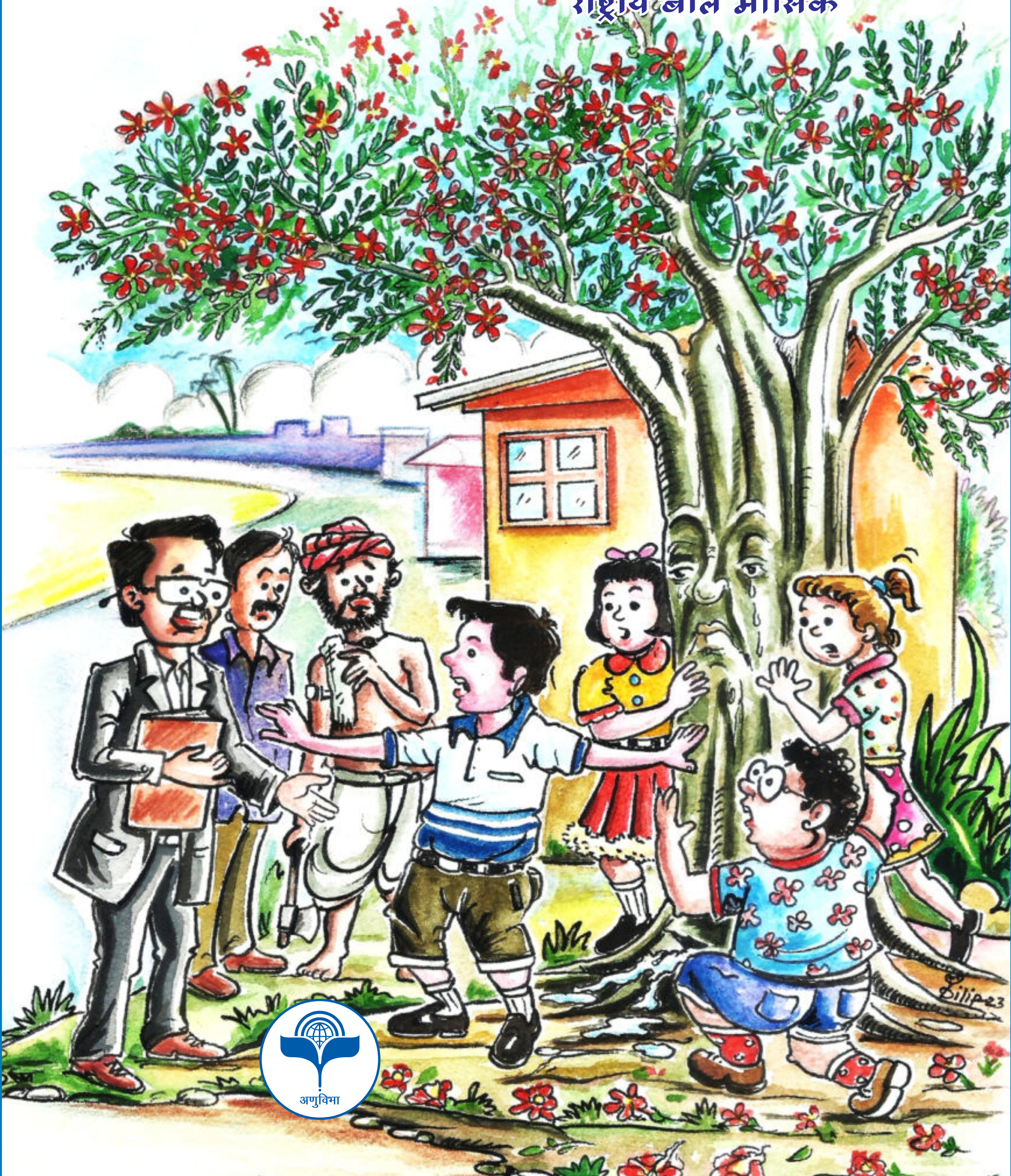

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

- उपग्रह अर्थात् Satellite दो प्रकार के होते हैं :– प्राकृतिक उपग्रह और मानव निर्मित उपग्रह। उदाहरण के लिए, चन्द्रमा पृथ्वी का प्राकृतिक उपग्रह है जबकि "अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन" पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला मानव निर्मित उपग्रह है।
- मानव निर्मित उपग्रह पृथ्वी का चक्कर लगाता रहे, इसके लिए उसकी गति को इस अनुपात में निर्धारित किया जाता है ताकि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव को सन्तुलित कर सके। अलग–अलग दूरी पर पृथ्वी की तीन कक्षाएँ निर्धारित की गई हैं। कुछ उपग्रह पृथ्वी की कक्षा के बहुत करीब होते हैं, इनकी ऊँचाई 160 से 1600 किलोमीटर के बीच होती है। ये उपग्रह बहुत तेज गति से पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं, इसलिए वे दिन में कई बार पृथ्वी का चक्कर लगाते हैं। इनका इस्तेमाल ज्यादातर इमेज और स्कैनिंग के लिए किया जाता है।
- कुछ ऐसे उपग्रह होते हैं जिन्हें पृथ्वी से 10 से लेकर 20 हजार किलोमीटर तक की ऊँचाई पर रखा जाता है। ये पृथ्वी का एक चक्कर लगभग 12 घंटे में पूरा करते हैं। ये उपग्रह एक निश्चित समय पर एक निश्चित स्थान से होकर गुजरते हैं। इन उपग्रहों का उपयोग नेविगेशन के लिए किया जाता है।
- तीसरे वे उपग्रह होते हैं जो पृथ्वी से बहुत दूर यानी करीब 36 हजार किलोमीटर की दूरी पर स्थित होते हैं। ये उपग्रह पृथ्वी की गति से पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते हैं, अर्थात् यदि यह उपग्रह आपके ठीक ऊपर है, तो यह हमेशा आपके ऊपर ही रहेगा। इन उपग्रहों का उपयोग दूरसंचार के लिए किया जाता है।
- सोवियत संघ ने 4 अक्टूबर, 1957 को दुनिया के पहले कृत्रिम उपग्रह "स्पुतनिक 1" के प्रक्षेपण के साथ "अंतरिक्ष–युग" की शुरुआत की थी। आर्यभट्ट भारत का पहला उपग्रह था, जिसे इसी नाम के महान भारतीय खगोलशास्त्री के नाम पर रखा गया था। यह सोवियत संघ द्वारा 19 अप्रैल 1975 को प्रक्षेपित किया गया।

- भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान का विधिवत कार्य 1962 में प्रारम्भ हुआ जो 15 अगस्त 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना के साथ बढ़ता चला गया। आज इसरो विश्व का प्रतिष्ठित संस्थान है जो न केवल भारत के बल्कि 35 से अधिक देशों के उपग्रह लॉन्च कर चुका है।

प्यारे बच्चो,

आपके प्यार ने ''बच्चों का देश'' को अपने सफर के 25वें वर्ष में पहुँचा दिया है। इस पत्रिका का हर पृष्ठ आपके जीवन को बेहतर बनाने की भावना से तैयार होता है। इनमें ज्ञान है तो मनोरंजन भी, सीख है तो जानकारी भी। रोज थोड़ा समय निकालो और किसी एक रचना को अवश्य पढ़ो, ध्यान से। मन में कोई प्रश्न उठे तो उसका समाधान ढूँढ़ने की कोशिश करो। बड़ों से पूछो, शिक्षकों से पूछो, गूगल से पूछो या हमसे पूछो!

आपके मन में कोई सुझाव आए, तब भी हमें लिख भेजो।

इस माह का एक विचार आपके लिए... आपने इससे क्या अर्थ निकाला, हमें लिख भेजिए।

इस माह का एक विचार आपके लिए -

जैसा तुम **सोचते** हो,
वैसे ही **बन** जाते हो।

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 25 अंक : 3 अक्टूबर, 2023

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : सुशील कुमार, दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : अविनाश नाहर
महामन्त्री : भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
प्रकाशन मन्त्री : देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार : सुरेन्द्र नाहटा

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

आलेख

08 **राज्य पक्षी–5 : लालकंठी तोता**
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
11 **महात्मा गांधी**
डॉ. चेतना उपाध्याय
26 **चन्द्रयान की सफल लैंडिग**
28 **अंक कितने जरूरी ?**
नेहा गुप्ता
34 **मेरा देश : गाँव विशेष–10**
शिखर चन्द जैन
38 **विश्व विरासत स्थल–1**
नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

विविधा

बुद्धि की परख : चाँद मोहम्मद घोसी – 13, विस्मयकारी भारत–10 : रवि लायटू –14, दिमागी कसरत : वसीम अहमद नगरामी – 16, वर्ग पहेली : राधा पालीवाल – 17, बूझो तो जानें : कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव– 21, प्रेरक प्रसंग– संजीव कुमार आलोक– 40, चित्र कथा : संकेत गोस्वामी – 48, परछाई ढूँढ़ो : राकेश शर्मा राजदीप–49,

कविता

08 **कैसा है बच्चों का देश**
डॉ. रामनिवास 'मानव'

10 **प्यारे बापू**
डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

10 **मेरा जन्मदिन**
आलोक कुमार मिश्र

18 **सत्य राह पर चलते जाना**
बलदाऊ राम साहू

18 **मैत्री बाग की सैर**
डॉ. दीक्षा चौबे

30 **आँगनजाई, चिड़ी कहाई**
डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

स्तम्भ

सम्पादक की पाती – 06, महाप्रज्ञ की कथाएँ – 07, आओ पढ़ें नई किताबें–20, सुडोकू–25, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो,–29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये– 30, व्हाट्सएप कहानी– 33, पढ़ो और जीतो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान – 46, किड्स कॉर्नर– 49,

कहानी

09 **कुछ गिरा क्या ?**
रजनीकान्त शुक्ल

15 **गुलमोहर चाचा**
नरेश मेहन

19 **हरियाली और खुशहाली**
नयन कुमार राठी

22 **अछूता बचपन**
शील कौशिक

23 **मगरमच्छुले को मिली शाबासी**
राजीव तांबे, डॉ. विशाखा ठाकूर

31 **व्योम का उपवन**
श्यामपलट पांडेय

35 **कला की परख**
चित्रेश

37 **सत्य की सीख**
लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

39 **जीत का रहस्य**
सावित्री चौधरी

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

स्वदेश आज जब स्कूल से घर लौटा तो उसके चेहरे पर खुशी के साथ–साथ उलझन सी देखकर उसकी मम्मी कुछ झिझकी। कपड़े बदल कर और मुँह–हाथ धोकर जब स्वदेश खाने के लिए बैठा तो मम्मी ने पूछ ही लिया– "बेटा, तुम्हारे चेहरे की खुशी का राज तो मैं जानती हूँ। आज स्कूल में चंद्रयान पर कार्यक्रम था और तुम्हारा प्रजेंटेशन सबको बहुत अच्छा लगा... क्यों, मैं सही कह रही हूँ ना?"

"हाँ माँ, तुम एकदम सही बोल रही हो। लेकिन तुम्हें कैसे पता चला?" "अरे तुम्हारी माँ हूँ। मुझसे कुछ छुपा रह सकता है क्या?" यह कहते हुए वो खिलखिला कर हँस पड़ीं और स्वदेश भी मम्मी से लिपट कर हँस पड़ा। "लेकिन ये बता सुदू, तुम्हारे मन में कोई उलझन भी चल रही है क्या? कोई समस्या! कोई सवाल!"

"अरे मम्मी, तुम्हें तो यह भी पता चल गया!... आज हमारे साइंस टीचर ने अपने गुरु को गेस्ट के रूप में बुलाया था। वे किसी संस्था में बड़े साइंटिस्ट हैं। उन्होंने अपने भाषण में विक्रम साराभाई, होमी जहाँगीर भाभा, सी वी रमन, एपीजे अब्दुल कलाम जैसे कई वैज्ञानिकों के नाम लिए और कहा कि वे दूरदर्शी थे। सभी बच्चों को भी बड़े सपने देखने चाहिए और दूरदर्शी बनना चाहिए।"

"ठीक ही तो कहा उन्होंने, इसमें उलझन की क्या बात है?" "उन्होंने यही तो नहीं बताया कि दूरदर्शी होता क्या है और बनते कैसे हैं? मैं तो दूरदर्शन जानता हूँ और टेलिस्कोप जानता हूँ।" मम्मी एक बार फिर अपनी हँसी नहीं रोक सकी, बोली– "अरे वही तो... जैसे टेलिस्कोप से हम दूर की चीज को साफ–साफ देख सकते हैं, वैसे ही दूरदर्शी लोग भविष्य की यानी 25–50 वर्ष आगे की बात का अनुमान पहले ही लगा लेते हैं। जिन वैज्ञानिकों के नाम उन्होंने लिए उन्होंने कितने साल पहले बड़े सपने देखे और उन्हें पूरा करने में जी–जान से जुट गए। उसी का फल है कि आज हम विज्ञान के क्षेत्र में इतने आगे बढ़ पाए हैं। चाँद पर देश का झंडा अब फहराया है लेकिन इसका सपना बहुत पहले देखा गया था। इसी को कहते हैं दूरदर्शी होना, समझे!"

"आपका इतना बड़ा भाषण सुनकर कौन नहीं समझेगा? बस, अब तो मुझे भी दूरदर्शी बनना है और बड़े–बड़े काम करने हैं।" घर एक बार फिर माँ–बेटे की हँसी से गूँज गया। स्वदेश के चेहरे पर अब उलझन नहीं थी, कुछ कर गुजरने का जज्बा और आत्मविश्वास था।

बच्चो, हमें भी दूर का सोचना है और बड़ा सोचना है। फिर छोटे–छोटे कदमों से आगे बढ़ते हुए मंजिल तक पहुँचना है। बहुत–बहुत शुभकामना!

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

खोटा रुपया

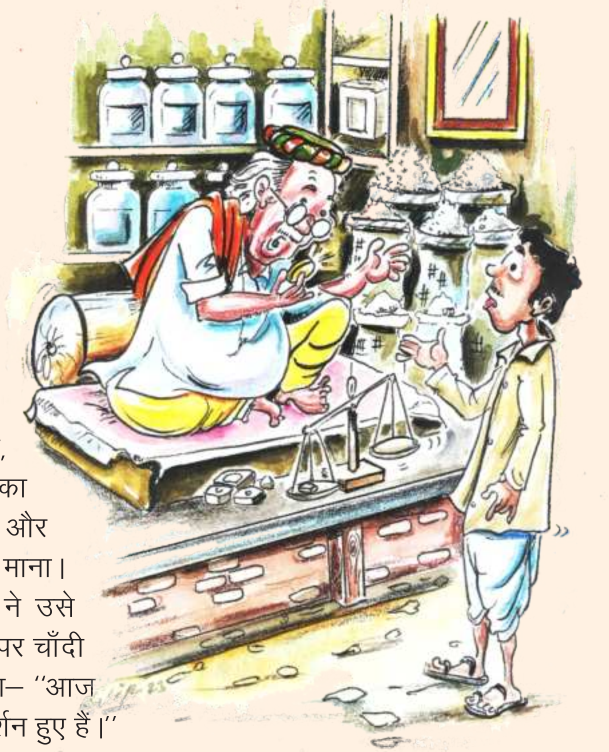

एक साहूकार की दुकान में एक आदमी आया। उसने एक पैसे का गुड़ लिया। सेठ ने पैसा लेकर उसे गुड़ दे दिया। उसने सोचा, प्रारम्भ अच्छा हुआ है, पहले–पहले ताम्बे का पैसा मिला। दूसरे दिन वह चाँदी का रुपया भुनाने आया। साहूकार ने वह रुपया ले लिया और उसको रेजगारी दे दी। साहूकार ने आरम्भ को शुभ माना। तीसरे दिन वह खोटा रुपया भुनाने आया। साहूकार ने उसे लेकर देखा तो वह खोटा रुपया था, नीचे ताम्बा और ऊपर चाँदी का झोल था। साहूकार ने रुपये को नीचे डालते हुए कहा– ''आज तो बहुत बुरा हुआ। सूर्योदय होते–होते खोटे रुपये के दर्शन हुए हैं।''

ग्राहक बोला– ''सेठजी! नाराज क्यों होते हो? परसों मैं ताम्बे का पैसा लाया था, तब आप बहुत प्रसन्न हुए और उसकी वन्दना की। कल मैं चाँदी का रुपया लाया था, तब भी आप बहुत प्रसन्न हुए और वन्दना की। आज मैं जो रुपया लाया हूँ उसमें ताम्बा और चाँदी दोनों हैं। आज तो आपको अधिक प्रसन्न होना चाहिए, इसकी दो बार वन्दना करनी चाहिए।''

साहूकार ने झल्लाते हुए कहा– ''मूर्ख! परसों तू पैसा लाया, वह कोरे ताम्बे का था, इसलिए खुश था। कल तू रुपया लाया, वह कोरी चाँदी का था, इसलिए वह भी खरा था। आज तू जो लाया है, वह न कोरा ताम्बा है और न कोरी चाँदी। वह तो धोखा है। नीचे ताम्बा है और ऊपर चाँदी का पानी चढ़ाया हुआ है इसलिए यह खोटा है।''

कथाबोध : जो शुद्ध और खरा है उसका ही पूरा मोल होता है। मिलावटी या अशुद्ध वस्तु का कोई मूल्य नहीं होता। यही बात मानव चरित्र पर भी लागू होती है।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 350 रु.

त्रैवार्षिक : 900 रु.

पंचवार्षिक : 1500 रु.

दस वर्ष : 3000 रु.

पंद्रह वर्ष : 7500 रु.

विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

बच्चों का देश

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन

ANUVRAT VISHVA BHARTI SOCIETY
IDBI Bank BRANCH Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC : IBKL0000104

UPI

RAZOR PAY
https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

हिन्दी नाम – **लालकंठी तोता**

अँग्रेजी नाम – Rose & ringed Parakeet

वैज्ञानिक नाम – Psittacula krameri

आन्ध प्रदेश का राज्य पक्षी : लालकंठी तोता

अविभाजित आन्ध्र प्रदेश का राज्य पक्षी नीलकंठ था लेकिन अब तेलंगाना नया राज्य बन जाने के बाद नीलकंठ तेलंगाना का और लालकंठी तोता आन्ध्र प्रदेश का राज्य पक्षी बन गया है।

यह छोटे आकार का छरहरा और लम्बी व पतली पूँछ वाला बीजभक्षी पक्षी है। हरे रंग का यह सुन्दर पक्षी 10–12 इंच लम्बा होता है जिसके नर के गले पर लाल कंठी होती है। शाकाहारी तोते का मुख्य भोजन फल और तरकारी है, जिसे यह अपने पंजों से पकड़कर खाता है।

इनकी उड़ान नीची और लहरदार, लेकिन तेज होती है। इसकी बोली कड़ी और कर्कश होती है, लेकिन सिखाए जाने पर यह मनुष्यों की बोली की नकल बखूबी कर लेता है। यह झुंड में रहने वाला पक्षी है। इसकी मादा पेड़ के कोटर या सूखे तनों के कोटरों में अंडे देती है। तोते की स्मरण शक्ति अन्य पक्षियों से तेज होती है। यह करीब सौ शब्द आसानी से सीख लेता है।

डॉ. कैलाश चन्द सैनी
जयपुर (राजस्थान)

कैसा है बच्चों का देश

बड़ा अनूठा इन्द्रधनुष-सा,
है बच्चों का देश।
जहाँ प्रेम की गंगा बहती,
नहीं वैर या द्वेष।।

हवा झुलाती है फूलों को,
झूला यहाँ हमेश।
कलियाँ झूमें, भँवरे चूमें,
इनका प्रेम अशेष।।

इनकी दुनिया, इनसे दुनिया,
लगती बड़ी विशेष।
उतरा जैसे स्वर्ग धरा पर,
पहन रंगीला वेश।।

सपनों की दुनिया में घूमें,
बनकर सब दरवेश।
चलो देखने हम भी चलते,
बच्चों का यह देश।।

कच्चा मन, पर पक्के रिश्ते,
लगे कभी ना ठेस।
सँग उड़ा ले जाती परियाँ,
देखें देश-विदेश।।

डॉ. रामनिवास 'मानव'
नारनौल (हरियाणा)

हमें खेद है कि बच्चों का देश सितम्बर 2023 अंक में इसी पृष्ठ पर प्रकाशित नीलकंठ के चित्र के स्थान पर किसी अन्य पक्षी का चित्र प्रकाशित हो गया था। यहाँ नीलकंठ का सही चित्र दिया जा रहा है। →

कुछ गिरा क्या?

ग्यारह साल की सातवीं कक्षा की छात्रा सुरम्या केरल के पलक्काड़ जिले में चेरमकुलनगारा की रहने वाली थी। स्कूल में प्रार्थना के बाद कक्षाएँ शुरू हुईं। उसने अपनी दैनिक पढ़ाई पूरी की। छुट्टी के समय सुरम्या ने उसकी सहेली अखिला से कहा– ''आओ खेलते हैं।'' दोनों के खेलते–खेलते हाथ पैरों में मिट्टी लग गई। अखिला का मन हुआ कि अपने हाथ पाँव पास में बहती नहर में धो लिए जाएँ। उसने सुरम्या को भी अपने साथ ले लिया। वे दोनों बातचीत करती हुई नहर की ओर चल दी। वहाँ पहुँच कर उसने अखिला से कहा– ''तुम जाओ हाथ–पाँव धो आओ। मैं यहीं पर खड़ी हूँ।''

''चलो ठीक है कोई बात नहीं। तुम खड़ी रहो, अभी मैं आती हूँ।'' –कहकर अखिला आगे बढ़ गई। वह नहर की पटरी से नीचे की ओर उतरी अचानक उसका पैर किसी पत्थर से टकराया और वह लुढ़कती हुई पानी के अन्दर जा गिरी। उसके गिरने से 'छपाक' से आवाज हुई। नहर की पटरी पर जिस जगह पर सुरम्या खड़ी थी वहाँ से नीचे का हिस्सा नहीं दिखाई दे रहा था। मगर जब छपाक की आवाज हुई तो सुरम्या ने पूछा– ''अखिला क्या हुआ, आऊँ क्या मैं?'' फिर जवाब की प्रतीक्षा किए बिना वह अखिला को देखने के लिए पटरी से नीचे की ओर बढ़ गई। उसकी निगाहें अखिला की ओर गईं तो उसका कलेजा धक से रह गया। अखिला पानी में गिरी थी। अब वह उस नहर के पानी में डूब रही थी।

सुरम्या पर नज़र पड़ते ही उसने बचने के लिए उससे गुहार लगाई क्योंकि उसे तैरना नहीं आता था। तैरना तो सुरम्या को भी बहुत अच्छी तरह नहीं आता था। मगर इस समय सहेली की जान बचाने का सवाल था। वह नहर के पानी के साथ–साथ दौड़ने लगी। उसने चारों ओर निगाहें दौड़ाकर देखा तो उसे कोई मददगार नहीं दिखाई दिया। इस बीच अखिला पानी में गोते खाने लगी थी। अब सिर्फ उसके हाथ ही पानी के ऊपर दिखाई दे रहे थे। अगर जल्दी ही कुछ न किया गया तो अखिला की जान चली जाएगी।

देखें पृष्ठ 13...

प्यारे बापू

याद सदा तुम आते बापू
करना प्यार सिखाते बापू।
भेदभाव से ऊपर उठकर
मेलजोल सिखलाते बापू।।

चरखा कातो खादी पहनो
मन्त्र नया बतलाते बापू।
राजनीति सेवा का पथ है
नहीं समझ सब पाते बापू।।

सबक एकता का जो भूले
उनको पाठ पढ़ाते बापू।
प्रेम-अहिंसा और शान्ति की
सबको राह दिखाते बापू।।

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
हरदोई (उत्तर प्रदेश)

मेरा जन्मदिन

आज जन्मदिन मेरा है।
घर में खुशियों का डेरा है।।

दादी सँग पेड़ लगाऊँगा,
दादा को सैर कराऊँगा,
चिड़ियों को दाना भी दूँगा।
जोश ने मुझको घेरा है,
आज जन्मदिन मेरा है।

माँ ने कपड़े नये दिलाए,
पापा खूब खिलौने लाए,
दोस्त सभी घर मेरे आए।
कितना सुखद सवेरा है,
आज जन्मदिन मेरा है।

एक बड़ा सा केक कटेगा,
हिस्सा सब में एक बँटेगा,
हैप्पी बर्थडे गूँज उठेगा।
नाच उठा मन मेरा है,
आज जन्मदिन मेरा है।

आलोककुमार मिश्र
नई दिल्ली

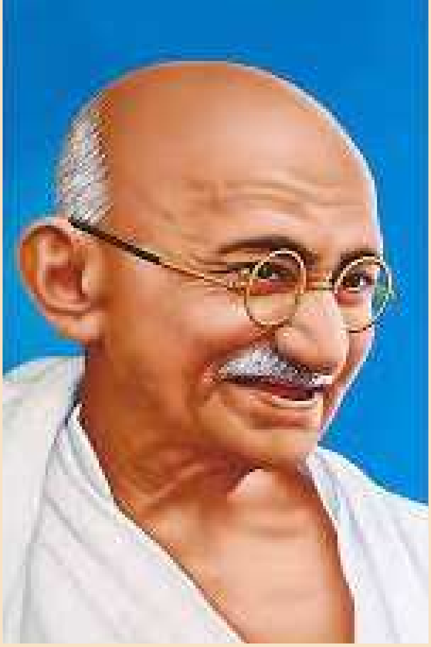

सत्य-अहिंसा के पुजारी
महात्मा गांधी

एक छोटे कद का कमजोर कद–काठी वाला बालक विद्यालय में अकसर अनुपस्थित रहा करता था। विद्यालय आता तो भी छुट्टी होते ही तेजी से घर की ओर भाग जाता। शिक्षक बड़े परेशान होते। बाद में आस पड़ौस से जानकारी लेने पर पता चलता कि उसके पिताजी का स्वास्थ्य खराब होने के कारण वह बालक उनकी सेवामें रहता है अतः विद्यालय में अनुपस्थित होने पर भी उसे शिक्षक कुछ नहीं कहते थे। जबकि माता–पिता के प्रति सेवा भावना के कारण वह दंड से बच जाता था। एक बार कम उपस्थिति के कारण उसे एक ही कक्षा में दूसरे वर्ष भी बैठना पड़ा था पर अनुशासित व्यवहार व आज्ञाकारी विद्यार्थी होने के कारण वह शिक्षकों का कृपापात्र बना रहा।

एक बार की बात है उसके विद्यालय में शिक्षा विभाग के बड़े अधिकारी निरीक्षण पर आए थे। उन्होंने छात्रों से अँग्रेजी के पाँच शब्द लिखवाए उनमें एक शब्द ''केटल'' था। बालक ने उसकी स्पेलिंग गलत लिख दी। गलत शब्द पर शिक्षक की नजर पड़ते ही उन्होंने उसे बूट की नोक मार कर सावधान किया। उन्होंने इशारे में उसे कहा कि यह शब्द गलत है, पास वाले बच्चे की पट्टी में देखकर सुधार कर लो। अन्य बच्चे तो समझ गए उन्होंने एक दूसरे का देखकर अपनी गलती सुधार ली। पर इस बच्चे को लगा कि शिक्षक यह कह रहे हैं कि दूसरे का मत देखो अपना अपना लिखो। इसने अपनी समझ के आधार पर शिक्षक के इशारे को समझा और बगैर इधर–उधर देखे अपना काम करता रहा। अधिकारी द्वारा जाँचने पर पाया कि सभी बच्चों ने सही शब्द लिखे हैं। इस अकेले बच्चे का गलत था। उसे गलती पर अच्छी खासी डाँट लगायी। उन अधिकारी के जाते ही कक्षा के शिक्षक बोले– ''कितने बेवकूफ हो तुम! तुम्हें इशारा करके समझाने के बाद भी तुमने दूसरे बच्चे का देख अपनी गलती में सुधार नहीं किया।''

वह बालक बोला– ''माफ कीजिएगा महोदय! मुझे इस शब्द की जानकारी नहीं थी इसलिए गलती हो गयी। दूसरे का देखकर लिखने की वह गलती मैं कैसे कर सकता हूँ ? दूसरे की नकल करना तो बुरी बात होती है।'' जानते हो बच्चो! माता–पिता के प्रति सेवाभाव, शिक्षकों के प्रति सम्मान के साथ मर्यादित आचरण वाला यह बालक मोहनदास करमचन्द गाँधी के रूप में विख्यात हुआ और जिसे राष्ट्रपिता के रूप में सम्पूर्ण राष्ट्र द्वारा स्वीकारा गया।

ब्रिटिश हुकूमत में पोरबन्दर और राजकोट के दीवान करमचन्द गांधी व श्रीमती पुतलीबाई के परिवार में 2 अक्टूबर, 1869 को आपका जन्म हुआ था। विलक्षण प्रतिभा के धनी बालक मोहनदास पर धार्मिक प्रवृत्ति की माता का अधिक प्रभाव था। आपका सम्पूर्ण जीवन माँ व मातृभूमि के प्रति समर्पित रहा। आप बाल्यकाल से ही शान्ति, सत्य और अहिंसा के पुजारी रहे। ब्रिटिश शासन के काल में स्वदेश प्रेम की ज्योति बचपन से ही आपके भीतर प्रज्वलित हो गयी थी। वे अपना प्रत्येक कार्य स्वयं अपने हाथों से करना जरूरी समझते थे। यहाँ तक कि वे अपने पहनने वाले वस्त्र भी स्वयं चरखे पर कातकर बुनकर ही पहनते थे।

सन् 1887 में आपने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर आगे की पढ़ाई हेतु भावनगर के सामलदास कॉलेज में प्रवेश लिया। यहाँ से डिग्री प्राप्त कर लन्दन गये और वहाँ से बैरिस्टर बन कर लौटे। इसके पश्चात् किसी कानूनी विवाद के सम्बन्ध में आप 1894 में दक्षिण अफ्रीका गये। वहाँ होने वाले अन्याय के खिलाफ आपने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया। इसके पूर्ण

होने के पश्चात् भारत लौटे। 1916 के उस दौर में आपने देश की आजादी के लिए अपने कदम उठाना शुरू कर दिए। सन् 1920 में काँग्रेस लीडर बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु के बाद आप ही काँग्रेस के प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में उभरे।

सन् 1914–1919 के बीच प्रथम विश्व युद्ध हुआ था। उसमें आपने ब्रिटिश सरकार को इस शर्त पर पूर्ण सहयोग दिया कि वे इसके बाद भारत को आजाद कर देंगे। परन्तु जब अँग्रेजों ने ऐसा नहीं किया तो फिर गांधीजी ने देश को आजादी दिलाने के लिए बहुत से आन्दोलन चलाये। उनमें से 1920 में असहयोग आन्दोलन, 1918 में चंपारन और खेड़ा सत्याग्रह, 1919 में खिलाफत आन्दोलन, 1930 में अवज्ञा आन्दोलन, नमक सत्याग्रह आन्दोलन, दांडी यात्रा, इसके पश्चात् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन राष्ट्रव्यापी आन्दोलन के रूप में तब्दील हुए। इस बीच आपके जीवन में अनेक बार उतार–चढ़ाव भी आए। आपने समाज में फैली छूआछूत को भी दूर करने के लिए बहुत प्रयास किए। आपने पिछड़ी जातियों को ईश्वर के प्रिय पात्र के रूप में हरिजन नाम दिया और ताउम्र उनके उत्थान के लिए प्रयासरत् रहे।

आपका यह मानना था कि पृथ्वी व प्रकृति के पास हमारी समस्त आपूर्तियों हेतु पर्याप्त साधन उपलब्ध है, मगर हमारे उपयोग की आकांक्षा को शान्त करने के लिए वह पर्याप्त नहीं है अतः हमें अपने उपभोग पर नियन्त्रण रखना चाहिए। प्राकृतिक उत्पादों को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। आगे चलकर आापकी यह अभिलाषा पर्यावरणीय चेतना के लिए महत्त्वपूर्ण प्रेरणा बनी जो कि अब वर्तमान की प्रमुख आवश्यकता हो गयी है।

गांधीजी बेहद सहज व सरल व्यक्तित्व के धनी थे। एक बार उनसे सुब्बाराव जी ने पूछा – ''आप देश के नौजवानों को क्या संदेश देना चाहेंगे?'' तो वे बोले– ''अरे भई! जो मैंने किया या जो मैं करता हूँ वह तो कोई भी साधारण व्यक्ति कर सकता है। मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। यही सच्चाई है।'' गांधीजी ने अँग्रेजी साम्राज्य को समाप्त करने हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका

गांधी जी के मुख्य रचनात्मक कार्य

अस्पृश्यता-निवारण
मद्य-निषेध
बुनियादी तालीम
प्रौढ़ शिक्षा
खादी और ग्रामोद्योग
स्त्री सम्मान व सम्मान

निभाई। वे अँग्रेजों की दमनकारी नीतियों, अन्याय, शोषण से सत्य व अहिंसा के सहारे लड़े मगर सीधे अँग्रेजों से नहीं लड़े। तभी अँग्रेजों ने संसद के सामने गांधीजी की प्रतिमा खड़ी की है।

हमने देखा कि उस नन्हे से बालक मोहनदास की जीवन यात्रा सादगी भरी व अनेक संघर्षों से युक्त रही। उसने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रूप में 30 जनवरी, 1948 को इस धरती से विदाई प्राप्त की। आपने बहुत सुन्दर, आदर्श जीवन जिया। आपके माध्यम से जो जीवन्त चेतना धरती पर आई थी, वह व्यापक और ताकतवर थी। ''हे राम'' आपके अन्तिम शब्द रहे। हमें भी गांधी मार्ग पर चलना चाहिए। गांधी तत्व को आत्मसात करना चाहिए। हममें से कोई भी गांधी नहीं हो सकता, किन्तु गांधी–तत्व को अपनाए जो हमें बेहतर मनुष्य होने में सहायता कर सकती है।

डॉ. चेतना उपाध्याय
अजमेर (राजस्थान)

त्रूटि सुधार : पत्रिका के सितम्बर अंक में पं. गोविन्द बल्लभ पंत की जीवनी में उन्हें भ्रमवश नाटककार बताया गया क्योंकि इसी नाम के उत्तराखंड में एक प्रसिद्ध नाटककार हुए हैं। गोविन्द बल्लभ पंत राजनेता ही थे, उन्होंने राजनीति से सम्बन्धित कुछ आलेख व जंगल से सम्बन्धित एक पुस्तिका का लेखन किया था।

यह जानकारी डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' से प्राप्त हुई। आभार।

बुद्धि की परख

प्रिय दोस्तों, इस काल्पनिक शक्तिशाली जानवर को ध्यान से देखकर बताओ इसका मुँह, धड़, पैर व पूँछ कौन–कौन से जानवरों की है?

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी

'कुछ गिरा क्या?' पृष्ठ 9 का शेष....

यह सोचकर सुरम्या ने अपना जी कड़ा किया और अपनी सहेली अखिला को बचाने के लिए नहर के पानी में छलाँग लगा दी। वह तेजी से तैरती हुई अखिला की ओर जाने लगी। सुरम्या को अखिला को बचाने के लिए नहर के पानी में कूदते हुए एक छोटी कक्षा के लड़के ने देख लिया। वह दौड़ता हुआ स्कूल में खबर करने के लिए चला गया।

सुरम्या न कोई पेशेवर तैराक थी और न उसने कभी किसी डूबते को बचाने का प्रशिक्षण लिया था। मगर फिर भी अपनी सहेली को बचाने के लिए अपनी जान की परवाह न करती हुई उसके पास तक जा पहुँची। उसने अखिला को पकड़ने की कोशिश की मगर बार–बार अखिला के पास जाकर चूक जाती। उसे यह भी डर था कि कहीं अखिला ही उसे न पकड़ ले। नहीं तो वह भी अखिला के साथ–साथ डूब जाएगी। इसलिए सावधानीपूर्वक वह एक बार फिर अखिला के पास पहुँची। इस बार उसने अखिला का हाथ मजबूती से पकड़ लिया था। फिर उसे खींचते हुए किनारे की ओर ले जाने लगी। इतनी देर तक पानी में रहने और डुबकी खाने के बाद अखिला के पेट में पानी जा चुका था। वह अचेत सी हो रही थी।

सुरम्या किनारे तक पहुँची और उसने अखिला को नहर के ऊपर सुरक्षित खींच लिया। इतनी देर में सुरम्या को शोरगुल सुनाई दिया। उसने नज़र उठाकर देखा कि उसके स्कूल के कई बड़े बच्चे और उनके पीछे उसके शिक्षक दौड़े चले आ रहे थे। उन्होंने आकर सुरम्या और अखिला को सान्त्वना दी और अखिला के पेट से पानी निकाला और होश में आने पर उसे ओर सुरम्या को लेकर स्कूल पहुँच गए। पहले उन्होंने अखिला से पूरी घटना की जानकारी प्राप्त की और सारी बात जानकर उन्होंने सुरम्या की हिम्मत की सराहना की।

उन्होंने सुरम्या का बहादुरी की घटना का ब्यौरा लिखकर वीरता पुरस्कार के लिए भेजा। भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली द्वारा सुरम्या को वर्ष 2003 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। उसे गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश के प्रधानमन्त्री जी के द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

विस्मयकारी भारत-10

जिसे ज्ञान अर्जित करना होता है, वह अपने को जाति-धर्म की सीमाओं में नहीं बांधता और यह बात एक बार फिर सिद्ध कर दी है महाराष्ट्र निवासी अब्दुल हसन अब्दुल निसार ने, जिन्होंने इस्कॉन इंटरनेशनल की अयोध्या इकाई द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित भगवदगीता और कृष्ण के उपदेशों पर आधारित प्रतियोगिता जीत ली। इसमें जहां दुनियाभर के 3,000 से ऊपर प्रतिभागी शामिल थे, इन्होंने पचास में सभी पचास प्रश्नों के सही उत्तर देकर सबको चौंका दिया।

भारत में 52 दरवाज़ों वाला महाराष्ट्र का एक अनोखा शहर है औरंगाबाद जिसका नाम बदलकर अब संभाजीनगर कर दिया गया है।

कहा जाता है कि मराठाओं से इस शहर की सुरक्षा के लिए मुग़लों ने इस शहर के चारों ओर दीवार का निर्माण करवाया था जिसमें क़रीब छोटे-बड़े 52 गेट्स वक़्त के साथ बनवाए गए थे।

इन 52 में से 4 चारों दिशाओं में मुख्य प्रवेश द्वार बने। मक्का गेट पश्चिम की ओर, उत्तर में दिल्ली गेट, पूर्व में जालना गेट और दक्षिण में पैठण गेट।

रंगीन दरवाज़ा, काला दरवाज़ा, भदकल गेट, रोशन गेट के अलावा औरंगाबाद में और भी छोटे-बड़े गेट हैं जिनमें बेग़म दरवाज़ा, इस्लाम दरवाज़ा, ख़ूनी दरवाज़ा, मीर आदिल दरवाज़ा, छोटा भदकल दरवाज़ा आदि शामिल हैं।

जैसलमेर (राज.) का कुलधारा गांव, जिसे पालीवाल ब्राह्मणों ने सन 1291 में बसाया था, पूरीतरह 'शापित' माना जाता है। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहां रहने वाले ब्राह्मणों ने किन्हीं कारणों से इसे रातोंरात छोड़ दिया था और तब से यह गांव ऐसा वीरान हुआ कि दहशत के मारे यहां अब कोई बसना नहीं चाहता। प्रचलित मान्यता के अनुसार यहां की रियासत का दीवान सालेम सिंह किसी ब्राह्मण कन्या से जबरन विवाह करना चाहता था जिसके लिए ब्राह्मण बिरादरी राज़ी नहीं थी अतः कोई विकल्प न होने के कारण उन्हें गांव छोड़ना पड़ा।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

© gyashim@gmail.com/ 0 8077554501

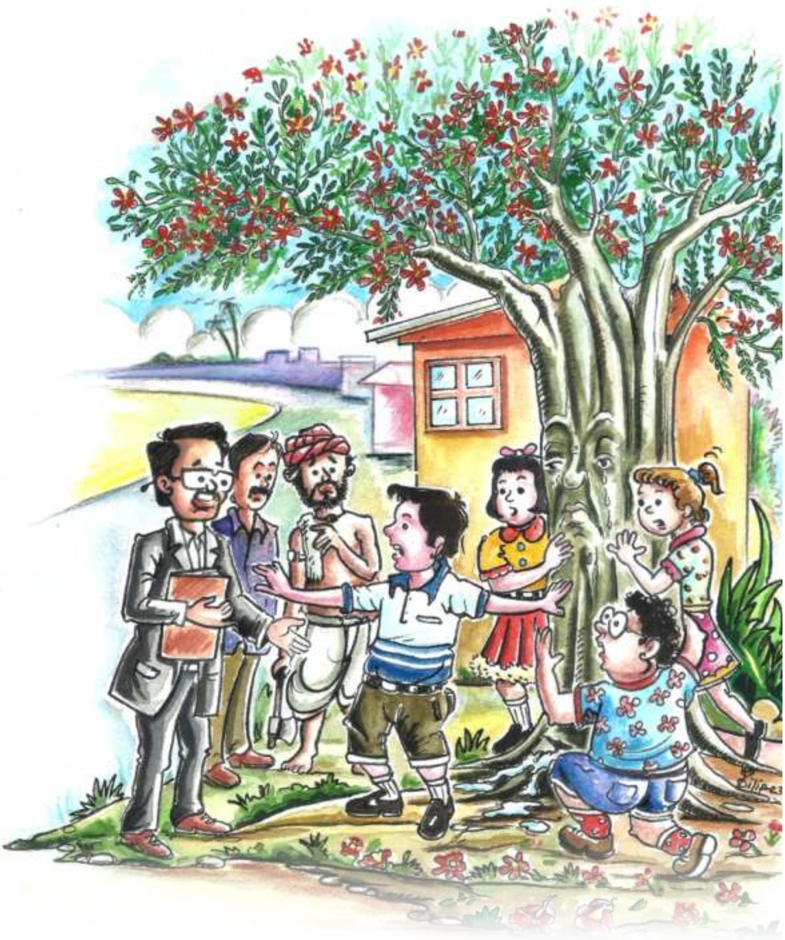

गुलमोहर चाचा

मेरे घर के पास एक गुलमोहर का पेड़ था। उसके ऊपर बहुत ही खूबसूरत फूल आते थे। उसके फूल हमारी छत पर व हमारे आँगन में कालीन की तरह बिछे रहते थे। ऐसे लगता गुलमोहर एक पेड़ नहीं है, कालीन बनाने बाला एक कारीगर है। हमेशा मुस्कराता रहता था। मेरे दादा जी ने उसे मेरे पिताजी के जन्मदिन पर एक नर्सरी से खरीद कर लगाया था। मेरे दादाजी ने गुलमोहर और मेरा लालन–पालन, साथ–साथ किया था। रोज उसे पानी देते थे। मैं भी बड़ा होने पर उसकी देखभाल करने लगा। मुझे बहुत प्यारा लगता था गुलमोहर का पेड़। मैंने उसके चारों तरफ कँटीली झाड़ियाँ लगा रखी थी जिससे कोई जानवर उसको नुकसान न पहुँचाये।

कुछ दिनों के बाद उसकी टहनियाँ हमारी छत को छूने लगी। जब पहली बार उसके फूल आये, तो उसने सारे फूल हमारी छत पर ही गिरा दिए। मेरे पिताजी ने उन्हें उठाकर, सबसे पहले मन्दिर में भगवान को अर्पित किए। गुलमोहर भी बहुत खुश हुआ। मेरे दादा जी व मैं गुलमोहर के नीचे ही गर्मियों में सोते थे। मेरा बचपन गुलमोहर के नीचे ही खेलते–कूदते बीत रहा था। जब मैं आठवीं कक्षा में था, तब मेरे दादा जी का देहान्त हो गया था। मरते समय मेरे दादा जी ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा– ”बेटे यह गुलमोहर तुम्हारा चाचा है। तुम इसका ध्यान रखना।”

अब मैं गुलमोहर का ध्यान अपने पिताजी से भी ज्यादा रखने लगा। स्कूल जाने से पहले गुलमोहर को अपने नन्हे हाथों से सहला कर छूकर जरूर जाता था। मेरे मोहल्ले के बच्चे भी उसको छूकर जाते थे। सभी उसे बहुत प्यार करते थे। जब उसके फूल आते थे, तब वह मेरी छत पर रोजाना बहुत सारे फूल गिरा देता था। यूँ लगता था गुलमोहर मेरे आने पर फूल बिछाकर स्वागत कर रहा हो। मैं कई बार कहता था चाचा ऐसा रोज–रोज क्यों करते हो? बस इतना सुनते ही गुलमोहर खिल–खिला कर हँस देता था। उसके हँसते ही बहुत सारे फूल फिर नीचे धरती पर गिर जाते थे। मैं बहुत खुश रहता था।

एक दिन मैं स्कूल से वापस आया तो, मैंने देखा गुलमोहर के पास बहुत–से लोग भीड़ लगाकर खड़े हैं। एक मोटा सा व्यक्ति उसे काटने की तैयारी कर रहा था और मेरे देखते–देखते ही उसने कुल्हाड़ी का पहला वार, उसके तने पर कर दिया था। आधी से ज्यादा कुल्हाड़ी उसके तने के अन्दर चली गई थी। मुझे यूँ लगा जैसे मेरी गर्दन किसी ने काट दी हो। मैं जोर से चीखता हुआ गुलमोहर के तने से लिपट गया। मैं जोर–जोर से रोने लगा। मैं नहीं काटने दूँगा इसे, यह मेरे चाचा है। नगर पालिका के एक बड़े अधिकारी गुस्से से बोले– "इस चाचा के बच्चे को पीछे हटाओ। हमें सड़क चौड़ी करनी है।''

उस मोटे से व्यक्ति ने मुझे खींचकर दूर जमीन पर पटक दिया। जमीन पर गिरते ही गुलमोहर के वृक्ष से जोर से आवाज आई– "क्यों काट रहे हो मुझे? मैंने आप सबका क्या बिगाड़ा है? मैं जिन्दा हूँ, तभी आप जिन्दा हैं, मैं आपको शुद्ध हवा देता हूँ। तभी आप स्वस्थ रहते हो। यह आप सबने कोरोना बीमारी में देख लिया होगा। क्या आप और आपके बच्चे बीमार रहना चाहते हैं? अगर आप बीमार रहना चाहते हो तो, मुझे काट दो।'' इतना सुनते ही सभी बच्चे गुलमोहर से लिपट गए। सभी कहने लगे गुलमोहर हमारा चाचा है। हमें फूल देता है, हमें शुद्ध हवा देता है। हम इसे नहीं कटने देंगे। गुलमोहर के कटे भाग से पानी निकल रहा था।

सभी बच्चों ने उस पर रूई लगाकर पट्टी बाँध दी। गुलमोहर की आँखों में प्रेम के आँसू निकल रहे थे। फिर अधिकारियों और कर्मचारियों ने यह कहकर छोड़ दिया कि कौन माथा मारे इन पागल बच्चों से। गुलमोहर को यह पागलपन बहुत प्यारा लगा। गुलमोहर खुश, बच्चे खुश व सारा पर्यावरण शुद्ध।

नरेश मेहन

हनुमानगढ़ जं. (राजस्थान)

दिमागी कसरत

दिए गए इस गद्यांश में जितने भी रिक्त स्थान हैं सभी में एक ही शब्द भरा जाएगा। जो तीन अक्षर का है। आप पूरे पैरेग्राफ को ध्यान से पढ़ें तो निश्चित ही उस शब्द को खोज सकेंगे।

किसी को .... लेना पसन्द होता है और किसी को .... लेना पसन्द नहीं होता। लेकिन ....लेना शरीर की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। .... से हमारा सम्बन्ध शैशवास्था से ही हो जाता है। जब माँ हमें दूध पिलाती है तो दूध पिलाने के बाद वह हमें .... दिलाने के लिए कंधे से लगाकर, हौले–हौले थपकी देकर .... दिलाती है। .... से खाए–पिए पदार्थ के पचने में मदद मिलती है। .... से ग्रहण किए गए भोज्य पदार्थ की गंध आती है। .... का आना कोई बीमारी या रोग नहीं है। लेकिन .... अपने आप में होती महत्त्वपूर्ण है। भोजन के उपरान्त यदि .... आ जाए तो यह माना जाता है कि भूख की तृप्ति हो गई। वैसे .... हर किसी को आए ही यह आवश्यक नहीं होता। लेकिन अगर .... आ जाती है तो अभी तक .... क्यों नहीं आई, इस बात की आशंका समाप्त हो जाती है। .... आने की स्थिति में हमें सामने वाले की ओर से मुँह घुमा लेना चाहिए। ताकि .... की गंध से अनायास किसी को परेशानी न हो। आवश्यकता से अधिक बार .... आने पर उपचार हेतु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

वसीम अहमद नगरामी

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

वर्ग पहेली

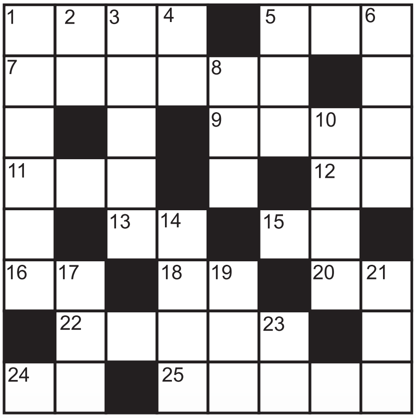

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ :

1. गहना, वाक्य की शोभा बढ़ाने की युक्ति (4)
5. पढ़ने वाला, वाचन करने वाला (3)
7. जिसका मकान हो, मकान का स्वामी (6)
9. अमानत में ––––– इस मुहावरे को पूरा करें। (4)
11. छोटे–छोटे पत्थर (3)
12. चेहरे का एक भाग, कपोल (2)
13. परिमाण, मात्रा (2)
15. माला, जीत का विपरीतार्थक (2)
16. गुण, कौशल, हुनर (2)
18. सौंपना, देना (2)
20. भारत का एक पड़ौसी देश (2)
22. चुनौती देना, फटकारना (5)
24. चर्मकार, जूते गाँठने वाला (2)
25. कृतिकार, रचयिता (5)

ऊपर से नीचे

1. मध्य प्रदेश का एक नगर जहाँ से सोन, नर्मदा व जोहिला नदी का उद्गम होता है। (6)
2. जहाँ रावण का राज्य था (2)
3. चुगली करना (5)
4. लक्ष्मी (2)
5. घटना, किस्सा (3)
6. ताली, हथेली (4)
8. लेखन (3)
10. ढोली, नगाड़ा बजाने वाला (4)
11. काँटा (3)
14. रेखागणित का एक उपकरण (4)
17. लोभी (3)
19. व्यय, खर्च का अपभ्रंश (3)
21. सिंचाई का कृत्रिम साधन (3)
23. माता के पिता, अनेक (2)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

मैं सारा जीवन दूसरों की बुराइयाँ देखने में लगा रहा लेकिन जब मैंने खुद अपने मन में झाँक कर देखा तो पाया कि मुझसे बुरा कोई इनसान नहीं है। मैं ही सबसे स्वार्थी और बुरा हूँ। भावार्थ यह है कि हम लोग दूसरों की बुराइयाँ बहुत देखते हैं लेकिन अगर हम खुद के अन्दर झाँक कर देखें तो पाएँगे कि हमसे बुरा कोई इनसान नहीं है।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो मन देखा आपना, मुझ से बुरा न कोय।

सत्य राह पर चलते जाना

बदल गया है आज जमाना,
उचित मार्ग से आना-जाना।
विपदा से लड़ना तुम डटकर,
कभी न अपनी पीठ दिखाना।।

कठिन परीक्षा आए कोई,
बच्चो, डर कर भाग न जाना।
कोशिश जो करते रहते हैं,
हौसला भी तुम्हीं बढ़ाना।।

झूठ-फरेबी ठीक नहीं है,
सत्य राह पर चलते जाना।
करना प्रीत धरा से अपनी,
राष्ट्रभक्त सदैव कहलाना।

मेरे बच्चो, एक निवेदन,
देशभक्ति का भाव जगाना।
अगर कहीं से भूल हुई,
फिर तो होगा बस पछताना।।

बलदाऊ राम साहू
दुर्ग (छत्तीसगढ)

मैत्री बाग की सैर

मैत्री बाग बना है सुन्दर,
विविध जन्तु हैं इसके अन्दर।
दुर्ग-भिलाई में है शोभित,
स्टील प्लांट भी है स्थापित।

यादगार बना एकता का,
भारत-रूस की मित्रता का।
है शक्तिशाली बाघ चीता,
तोते का पिंजरा न रीता।

जिराफ लम्बी गर्दन वाला,
मोर नाचता खूब निराला।
हिरण घूमते बनकर साथी,
सूँड उठाकर भागे हाथी।

भालू ढूँढ़ रहा है पानी,
बन्दर को होती हैरानी।
इधर-उधर वह दिन भर उछले,
केला खाने को मन मचले।

सिंह शेर की चाल निराली,
चिड़िया देखो कलगी वाली।
भाँति-भाँति के बगुले सारस,
अजगर बैठा करता आलस।

इन पर कोई चीज न फेंको,
दूर-दूर से इनको देखो।
जीव-जन्तु को तंग न करना,
मैत्री बाग को स्वच्छ रखना।

डॉ. दीक्षा चौबे
दुर्ग (छत्तीसगढ़)

हरियाली और खुशहाली

पात्र : एक किसान, हवा व पानी के रूप में दो बालक

(हॉल में सूखे और बंजर खेत का चित्र लगा है। किसान का प्रवेश। चित्र की ओर इशारा करके गाते हुए)

चहुँओर बंजर और सूखा है।
हर कोई प्यासा और भूखा है।।
वरुण देव ने भी की है रुसवाई।
न तो पानी है, न चलती है पुरवाई।।
कैसे करूँ बुवाई? कैसे करूँ सिंचाई?
अब तो जान पर है बन आइ।।
मुँह से निकले राम दुहाई।
मुँह से निकले राम दुहाई।।

(पात्र पानी का प्रवेश। उसे देखकर खुश होकर हाथ जोड़ते हुए किसान)

किसान : अच्छा हुआ पानी महाराज! तुमने हम धरतीवासियों पर तरस खाया। तुम्हारे आ जाने से मेरी और मेरे धरतीवासी भाइयों की फिक्र मिटेगी। खेतों में फसलें खिलेगी। जन–जन की भूख और प्यास मिटेगी। सपना सच्चा हो जाएगा। सब कुछ अच्छा हो जाएगा।

पानी : (उदासी के अन्दाज में) ये तुम क्या बोल रहे हो? क्यों खुशी में इतराकर डोल रहे हो? अब अपनी दूर से ही राम–राम है। मीठी बातों से बहलाने की कोशिश मत करो। करना बहुत

काम है। अच्छा तो हम चलते हैं। फिर मिलेंगे तब बात करेंगे।

(वह परदे के पीछे चला जाता है।)

किसान : (सिर पर हाथ रखकर किसान उदास–सा) पानी आया भी नहीं कि चला गया। कुछ दिनों से यही हो रहा है। पानी आता तो है पर जाने कहाँ चला जाता है? दिनों दिन यह हो रहा है। मन मेरा अन्दर से रो रहा है। पानी से बहुत दूरी है। किससे कहें मजबूरी है? यह कैसी मजबूरी है?

(हवा का प्रवेश)

किसान : किसान अच्छा हुआ तुम आ गई हो। मन को बहुत भा गई हो। यहाँ तो दिन रात सुबह–शाम गरमी से हाल है बेहाल। बढ़ा लो अपनी चाल। हमसे मिला ले अपनी ताल।

हवा : (मुँह बिचकाते हुए) ये तुम क्या कह रहे हो? मुझे बहलाने की कोशिश कर रहे हो। मैं हूँ मतवाली। तुम्हारी मीठी बातों में नहीं आने वाली। अपने मतलब के लिए तुमने और तुम्हारे भाई–बन्धुओं ने हरे–भरे वृक्षों की बेरहमी से काटा। धरती माँ को बिल्डिंगों मल्टियों में बाँटा। अपनी करनी का फल भुगतो। मुझे न रोको, मुझे न टोको। मैं चली... मैं चली... जाने कहाँ... जाने किधर...।

(हवा भी लहराते हुए चली जाती है)

किसान : पानी आया भी और चला भी गया।

आओ पढ़ें : नई किताबें

विविध विषयों की 38 बाल कविताओं की इस पुस्तक का नाम ही बड़ा प्यारा है। अधिकतर कविताएँ सहज–सरल है। पढ़ने में रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक है। बाल कविताओं की यह सचित्र पुस्तक बालकों के मन को प्रसन्न कर सकेगी। कविताओं में संदेश देने का भी अच्छा प्रयास हुआ है।

पुस्तक का नाम : चूँ–चूँ चीं–चीं **लेखक :** आशा रानी जैन 'आशु'
मूल्य : 60 रुपये **पृष्ठ :** 48 **संस्करण :** 2021
प्रकाशक : सनातन प्रकाशन, जयपुर (राजस्थान)

सुन्दर आवरण एवं आकर्षक शीर्षक की इस पुस्तक में 36 बाल कविताएँ हैं। सभी कविताएँ लय और तुकान्त की दृष्टि से उपयुक्त है। इनके साथ बड़े आकार के चित्र भी दिये गये हैं। अधिकतर कविताएँ आकार में छोटी है। इनमें विषय को रोचक ढंग से चित्रित किया गया है। कविताएँ प्रेरक एवं संदेशपूर्ण है।

पुस्तक का नाम : बन्दर ने जब खाई मिठाई **लेखक :** डॉ. मेजर शक्तिराज
मूल्य : 150 रुपये **पृष्ठ :** 48 **संस्करण :** 2021
प्रकाशक : जीएस पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली

हवा भी आई और चली गई। इनके जाने से सारी खुशियाँ चली गई। किससे गुहार करूँ? किसको पुकारूँ? सभी गलती के लिए खुद को ही मारूँ, खुद को ही मारूँ।

(हाथ से वह सिर पर मारने लगता है)

(पानी और हवा का फिर से प्रवेश)

पानी : तुम क्यों अकेले अपने को कोस रहे हो? तुम और तुम्हारे साथ सभी धरतीवासी भी दोषी है। इन्होंने हमारी कद्र जरा भी नहीं जानी। मुझे जैसा चाहा वैसा बहाया। ताल–तलैया... नदिया–सागर को मिटाया। मेरी सखी हवा से की रुसवाई। पेड़–पौधों वृक्षों को काटकर धरती बंजर बनाई। जब तुमने मुँह की खाई। जान पर बन आई। तब हमारी ही याद आई। अब भी समय है जाग जाओ। अपने साथ धरतीवासियों को समझाओ।

हमारा महत्त्व बतलाकर चहुँओर पौधारोपण करवाओ। फिर देखना चलेगी ठंडी पुरवाई। वरुण देव खुश हो जाएँगे। पानी आने से धरती पर चहुँओर हरियाली ही हरियाली होगी। हर चेहरे पर खुशहाली ही खुशहाली होगी। न कोई भूखा रहेगा न कोई प्यासा रहेगा। जन–जन खुश होकर कहेगा। हरियाली है भई हरियाली है। इसी में खुशहाली है। इसी में खुशहाली है।

(तीनों झूमते हुए परदे के पीछे चले जाते है।)

नयनकुमार राठी
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

बूझो तो जानें

1

रुके हुए पानी में मैं,
हरदम पाया जाता हूँ।
डंक से मेरे बच न पाए,
जमकर धूम मचाता हूँ।

5

लकड़ी की दुश्मन कहलाऊँ,
कागज़ चट कर जाती हूँ।
संघ बनाकर मैं रहती हूँ,
बोलो क्या कहलाती हूँ?

2

तीन अक्षर का इसका नाम,
किसान मित्र कहलाता है।
कभी धरा के अन्दर रहता,
भोजन मिट्टी से पाता है।

3

छह पैर दो पर होते हैं,
साथ गन्दगी लाती है।
काला भूरा रंग है इसका,
घर-घर पाई जाती है।

4

संघ बनाकर यह रहती,
मधु साथ में लाती है।
डंक है इसका बड़ा नुकीला,
फूलों पर मंडराती है।

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव, कालपी जालौन (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

अछूता बचपन

तीन वर्षीय आशी अपने दादाजी के साथ बाजार गई। गुब्बारे वाले के पास डंडे पर रंग–बिरंगे व तरह–तरह के आकार के गुब्बारे देखकर वह रुक गई और हवाई जहाज के आकार का बड़ा सा गुब्बारा लेने के लिए मचल गई। "बेटा यह गुब्बारा तो घर जाने तक फट जाएगा या इसकी हवा निकल जाएगी और फिर गए पैसे पानी में। मैं तुम्हें अच्छी सी कोई खाने की चीज या फिर कोई ऐसा खिलौना लेकर दूँगा जिससे तुम देर तक खेल सको।"

दादा ने समझाया पर वह जिद पर अड़ गई– "नहीं, मुझे तो यही गुब्बारा चाहिए।" दादा ने हार मानते हुए उसे उसकी पसन्द का लाल गुब्बारा ले दिया। "दादाजी! दीदी के लिए भी तो लो।" दादाजी को पता था कि दोनों बहनें यदि आपस में खूब लड़ती–झगड़ती हैं तो एक दूसरे से बहुत प्यार भी करती है और हमेशा एक दूसरे के लिए एक जैसी दो चीजें लेती हैं। "अच्छा बता तेरी दीदी के लिए कौन से रंग का बैलून लूँ।" दादा ने पूछा। "ये वाला ब्लू रंग का।" आशी ने गुब्बारे को हाथ से छूकर कहा। दोनों बैलून हाथ में सँभाले वह बहुत खुश थी।

कुछ देर बाद दादाजी कपड़ों के शोरूम में ड्रेस खरीदने में व्यस्त हो गए। शोरूम बहुत बड़ा था। खुली जगह मिलने पर आशी अपने लाल बैलून को हाथ मार कर ऊपर उछाल कर खेलने लगी। थोड़ी देर बाद धीरे–धीरे उसकी हवा कम हो गई और गुब्बारा पिचक–सा गया। उसका आकार भी बिगड़ गया था।

देखें पृष्ठ 25...

ममता की छाँव में

मगरमच्छुले को मिली शाबासी

मगरमच्छ का बच्चू मगरमच्छुला, कीचड़ में आराम से लेटा था। मम्मी मगरमच्छ शान्ति से बगल में सोयी हुई थी। मगरमच्छुले ने पूँछ खींच–खींचकर मम्मी को उठा दिया। मम्मी ने एक आँख खोलकर बड़ी–सी जम्हाई ली! मगरमच्छ थोड़ी सी दूर सरक गयी और कीचड़ में फिर से सो गयी। मगरमच्छुला झुँझलाकर तिलमिलाया। मगरमच्छुले ने मुलायम कीचड़ में अपनी पूँछ ज़ोर से पटक दी। मम्मी के बदन पर धपाक से कीचड़ का फव्वारा उड़ा। मम्मी ने डरकर दोनों आँखें खोल दी।

"मम्मी मैं बहुत बोर हो गया हूँ ना! मेरे दाँतों में पत्तों की डंडियाँ फँसी हैं। मैंने बहुत चबाया पर फँसे हुए पत्ते बाहर निकलने का नाम ही नहीं ले रहे हैं ना मम्मी। बोलो ना, मैं उन्हें कैसे निकालूँ?" मगरमच्छुला तंग आकर तिलमिलाकर बोला।

"अरे, मुँह खोलकर पड़े रहो ना किनारे पर, अपने आप निकल जाएँगे पत्ते और हवा में उड़ जाएँगे।" मम्मी की यह बात सुनकर मगरमच्छुला डर गया।

मगरमच्छुला भ्रम में पड़ गया। मगरमच्छुला मुँह मजबूती से बन्द करके आगे–पीछे रेंगने लगा। दाहिने हाथ से कीचड़ फैलाने लगा। पैर रगड़ते हुए कीचड़ में गड्ढा बनाने लगा। आँखें बन्द करके कीचड़ में गला रगड़ने लगा। यह देखकर मम्मी को गुस्सा आया। मम्मी आँखें बड़ी करके बोली– "मगरमच्छुले, मैंने जैसे कहा वैसे करो। बड़ा–सा मुँह फैलाकर ओ करो। मुँह बन्द रखोगे तो दाँतों में फँसी चीजें बाहर नहीं निकलेंगी। चलो, मुँह खोलो, बड़ा–सा ओ करो। नहीं तो पूँछ का एक जोरदार लप्पड़ दूँगी, समझे!"

मगरमच्छुले ने डरकर कहा– "अरी मम्मी, लेकिन मैंने मुँह खुला रखा और मेरे दाँत ही उड़ गए... हवा में उड़ गए तो मैं खाना कैसे खाऊँगा? कहाँ से खाऊँगा? और मम्मी मेरे दाँत ही चले गए तो... तो... मैं तुम्हारे साथ बातें कैसे कर पाऊँगा? मैं

मुँह खुला रखकर बिलकुल भी किनारे पर नहीं लेटूँगा।"

हाँ हाँ हाँ हँसते हुए मम्मी मगरमच्छ ने कहा– "पगले रे, मेरे पगले! अरे दाँत नहीं बच्चे... दाँतों में फँसी गन्दगी निकल जाएगी, ऐसा मैंने कहा। तुम मुँह खोलकर किनारे पर पड़े रहो और फिर देखो कैसा मजा आता है?"

मगरमच्छुले का उलझनभरा चेहरा देखकर मम्मी ने हँसते हुए आगे कहा– "अरे, तुम मुँह खुला रखोगे, तो चीं–चीं करती हुई गौरैया आएगी। तुम्हारे दाँतों में फँसा पत्ता निकालेगी और फुर्र से उड़ जाएगी।" मम्मी के इतना समझाने पर भी मगरमच्छुले ने मुँह नहीं खोला। मगरमच्छुला एकदम चुप! आँखें फैलाकर और पूँछ ऊँची करके मम्मी की ओर टकटकी लगाए देखता रहा।

इस बार मम्मी ने डाँट नहीं लगायी। ना ही गुस्सा किया! मम्मी प्यार से रेंगते हुए मगरमच्छुले के पास गयी। मगरमच्छुले की नाक पर, चेहरे पर उसने हाथ घुमाया। उसकी नाक पर अपनी नाक रगड़ी। मगरमच्छुला मम्मी की गोद में घुस गया। मम्मी ने उसे प्यार से सहलाया और पूँछ से पूँछलाया!! तब, मगरमच्छुले को बहुत अच्छा लगा! बहुत खुशी हुई! मगरमच्छुला बड़े ही लाड़–प्यार में आकर बोला– "मम्मी, वह चीं–चीं गौरैया कहीं पागल–वागल तो नहीं है ना?" अब मम्मी को उलझन महसूस हुई। वह समझ ही नहीं पायी कि मगरमच्छुला बोल क्या रहा है? वह एकदम चुप हो गयी। आँखें छोटी करके सतर्कता से मगरमच्छुले की ओर देखने लगी।

मगरमच्छुला मम्मी को समझाते हुए बोला– "अरी मम्मी, वह चीं–चीं गौरैया अगर पागल होगी तो वह मेरा दाँत निकाल देगी और पत्ता वहीं छोड़ जाएगी। फिर तो मैं ही परेशान।" अब मम्मी को समझ आया कि मगरमच्छुले की उलझन क्या है? वह मुँह खोलकर हॉफॉ–हॉफॉ, हॉफॉ–हॉफॉ हँसने लगी। मम्मी ने कहा– "रुक, मैं ही तुम्हें मजेदार बात दिखाती हूँ।" मम्मी मगरमच्छ रेंगती हुई किनारे पर गयी। बड़ा–सा मुँह खोलकर ओ करके किनारे पर पड़ी रही। पेड़ की गौरैया ने 'ओआ' मगरमच्छ को देखा। गौरैया भुरर से उड़ी, मगरमच्छ के सामने आकर बैठ गयी। मगरमच्छ ने आँखें मिचकायी। गौरैया टप–से मगरमच्छ के मुँह में चली गयी।

मगरमच्छ ने अपनी आँखें बन्द कर ली। दाँतों में फँसे पत्ते, पत्तों की डंडियाँ, लता–बेल के टुकड़े, कांई, काँटे गौरैया ने टकाटक निकाल दिए। अपनी चोंच में लेकर उन्हें बाहर भी फेंक दिया। गौरैया ने अपने पसन्दीदा पत्ते चोंच में लिए और वह अपने घोंसले की ओर भुरर से उड़ गयी। मुँह को ओ की स्थिति में रखने से मगरमच्छ का मुँह अब दुखने लगा था। मगरमच्छ ने बड़ी–सी डकार दी 'हॉफॉगा' और फिर... थोड़ी देर बाद अपना मुँह बन्द कर दिया।

मगरमच्छुला लेटे–लेटे यह सब दूर से देख ही रहा था। "अरी मम्मी, तुम्हें कैसे पता चला कि गौरैया चली गयी है? क्योंकि तुम्हारी तो आँखें बन्द थी ना?" मम्मी के पास सरकते हुए मगरमच्छुला झुँझलाकर बोला– "अरे मच्छुले मेरे बच्चे, इसलिए तो मैंने जोरदार डकार दी। ताकि उसकी आवाज से गौरैया उड़ जाए।" मम्मी ने ऐसा कहते ही मगरमच्छुले ने कहा– "और हाँ, डकार देने के बाद तुमने तुरन्त अपना मुँह बन्द नहीं किया, बल्कि थोड़ी देर के बाद बन्द किया, वह इसीलिए ना मम्मी?" "मेरा समझदार मच्छुला है तू! अब मुँह खोल।" मम्मी उसे पूँछलाते हुए बोली।

मगरमच्छुला बड़ा–सा 'ओ' करके किनारे पर पड़ा रहा। बहुत समय गुजर गया; पर गौरैया आयी ही नहीं। मगरमच्छुले को लगा, अब क्या होगा? मेरे मुँह में फँसे पत्ते क्या अब कभी भी बाहर नहीं निकलेंगे? तभी डरते–डरते गौरैयु आया। मगरमच्छ के सामने बैठ गया। गौरैयु ने पंख फड़फड़ाए। यों ही यहाँ–वहाँ देखा। चोंच से पंख खुजाए। लेकिन गौरैयु ने मगरमच्छ की ओर बिलकुल भी नहीं देखा।

मगरमच्छुला उलझन में पड़ गया। उसने हड़बड़ी में पहले ही जोरदार डकार दे दी और मुँह मजबूती से बन्द कर दिया। गौरैयु कुछ समझ ही नहीं पाया? यह क्या बात हो रही है? वह बेहद डर गया। बेचारा गौरैयु, जान मुट्ठी में लेकर भुरर से उड़ गया। मम्मी मगरमच्छ और मम्मी गौरैया हॉफॉ–हॉफॉ, हॉफॉ–हॉफॉ, चीं–चीं,चीं–चीं हँस दी। दोनों ने अपने–अपने बच्चूओं को समझाया। अच्छे से समझा दिया। फिर, मगरमच्छुले ने फिर से मुँह खोला। फिर से गौरैयु आया। मगरमच्छुले के सामने बैठ गया। मगरमच्छुले ने आँखें मिचकायी। फिर उसने मुँह खोलकर बड़ा–सा ओ किया।

गौरैयु फिर से डर गया। उसके पंख थरथराये। गौरैयु ने डरकर मम्मी की ओर देखा। मम्मी गौरैया ने पंख फुलाते हुए, गर्दन हिलाकर इशारा किया। उसने अपनी जगह पर ही कूदी लगाकर गौरैयु बच्चू का ढाढ़स बँधाया। गौरैयु का डर कम हुआ। उसके पंखों की थरथराहट रुक गयी। उसने खुश होकर मम्मी की ही तरह एक कूदी मारी। फिर गौरैयु मगरमच्छुले के मुँह में बिना डरे घुस गया। टुकटुकटुक–टकाटक, टुकटुकटुक–टकाटक, कुटकुटकुट–कटाकट, कुटकुटकुट–कटाकट, मगरमच्छुले का मुँह साफ हो गया। चकाचक बन गया।

गौरैयु को सुरर्र से उड़कर जाते हुए मगरमच्छुले ने देखा। फिर भी मगरमच्छुले ने जोर से डकार दी। थोड़ी देर तक राह देखी। फिर उसके बाद ही अपना मुँह बन्द किया। मम्मी मगरमच्छ ने गौरैयु को शाबाशी दी और मम्मी गौरैया ने किसे शाबाशी दी होगी, बता सकेंगे? आपके मन का जवाब ही 'सही जवाब' है, यह जान लो! इसीलिए... आप सबको भी शाबाशी।

राजीव तांबे, पूणे (महाराष्ट्र)
अनुवाद : डॉ. विशाखा ठाकूर
ठाणे (महाराष्ट्र)

सुडोकू

		7	8		5	2		
8			6		4			5
	1			9			8	
4			2	8	9			7
5			7	6	1			2
	7			3			6	
3			1		6			4
		2	5		8	1		

उत्तर इसी अंक में

'अछूता बचपन' पृष्ठ 22 का शेष

घर वापस लौटने पर दादा ने देखा कि आशी कभी लाल बैलून वाला हाथ आगे और ब्लू वाला पीछे और कभी ब्लू बैलून आगे और लाल वाला पीछे करने में लगी थी। उसके मन में घमासान मचा था। कुछ देर बाद वह ब्लू बैलून वाला हाथ आगे करते हुए बोली– "ये लो दीदी, यह अच्छे वाला ब्लू बैलून आपका है। मेरे लाल बैलून की तो हवा निकल गई।'' "अरे हाँ! तेरे वाले बैलून की तो हवा निकल गई है।" बड़ी ने लाल गुब्बारे को छूते हुए कहा। ''लो आशी तुम यह ब्लू वाला बैलून ले लो, मैं पापा के साथ जाकर इसमें हवा भरवा लूँगी।'' बड़ी ने लाल बैलून हाथ में पकड़ते हुए कहा तो लगा उसने छोटी के प्रति अपना प्यार उड़ेल दिया हो।

शील कौशिक
सिरसा (हरियाणा)

भारतीय वैज्ञानिकों की उत्कृष्ट उपलब्धि

- चंद्रयान–3 को LVM3-M4 राकेट द्वारा सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (शार), श्रीहरिकोटा(आन्ध्रप्रदेश) से 14 जुलाई, 2023 शुक्रवार को दोपहर 2:35 बजे लॉन्च किया गया।
- यह यान चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास की सतह पर 23 अगस्त 2023 को सायं 06:04 बजे के आसपास सफलतापूर्वक उतर चुका है।
- इसी के साथ भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक अंतरिक्ष यान उतारने वाला विश्व का पहला और चंद्रमा पर उतरने वाला चौथा देश बन गया।
- इस उत्कृष्ट उपलब्धि का श्रेय भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) बेंगलुरु के वर्तमान अध्यक्ष एस. सोमनाथ और उनकी टीम के वैज्ञानिकों को जाता है।
- इस मिशन की थीम – **'साइन्स ऑफ द मून'** रखी गई है।

चंद्रयान–3 मिशन के तीन मुख्य उद्देश्य

1. लैंडर की चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग कराना।
2. चंद्रमा पर रोवर की विचरण क्षमताओं का अवलोकन और प्रदर्शन।
3. चंद्रमा की संरचना को बेहतर ढंग से समझने और उसके विज्ञान को अभ्यास में लाने के लिए चंद्रमा की सतह पर उपलब्ध रासायनिक और प्राकृतिक तत्वों, मिट्टी, पानी आदि पर वैज्ञानिक प्रयोग करना।

चन्द्रयान की सफल लैंडिंग

Lunar far side area as imaged from the Lander Hazard Detection and Avoidance Camera (LHDAC) onboard Chandrayaan-3 on August 19, 2023

प्रोपल्शन मॉड्यूल– इसका प्रोपल्शन मॉड्यूल ने संचार रिले उपग्रह की तरह व्यवहार किया। प्रोपल्शन मॉड्यूल, लैंडर और रोवर युक्त ढाँचे को तब तक अंतरिक्ष में धकेलता रहा जब तक कि अंतरिक्ष यान 100 किमी ऊँचाई वाली चंद्र कक्षा में न पहुँचा।

लैंडर–चंद्रयान–3 के लैंडर विक्रम में चार थ्रॉटल–सक्षम C20 क्रायोजेनिक इंजन है। इसके अतिरिक्त, चंद्रयान–3 लैंडर लेजर डॉपलर वेलोसीमीटर (एलडीवी) से लैस है। इसके इम्पैक्ट लेग्स को मजबूत बनाया गया है और उपकरण की खराबी का सामना करने के लिए एक से अधिक उपाय किए गए हैं। लैंडर पर तापीय चालकता और तापमान को मापने के लिए चंद्रा सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सपेरिमेंट (ChaSTE, चेस्ट), लैंडिंग साइट के आसपास भूकंपीयता को मापने के लिए इंस्ट्रूमेंट फॉर लूनर सेसमिक ऐक्टिविटी (ILSA) व प्लाज्मा घनत्व और इसकी विविधताओं का अनुमान लगाने के लिए लेंगमुइर प्रोब (RAMBHA-LP) नामक भारतीय पेलोड शामिल हैं।

रोवर–प्रज्ञान 6 पहियों वाला लगभग 26 किलोग्राम वज़नी एक रोवर है जो 500 मीटर के दायरे में कार्य करने की क्षमता रखता है। प्रज्ञान रोवर लैंडिंग साइट के आसपास तत्व संरचना का पता लगाने के लिए अल्फा पार्टिकल एक्स–रे स्पेक्ट्रोमीटर (APXS) औरलेज़र इंड्यूस्ड ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप (LIBS) नामक पेलोड से युक्त है।

अंक कितने जरूरी?

आज जब कक्षा में पर्यावरण अध्ययन विषय के अंक शिक्षिका द्वारा सभी बच्चों को बताए गए, तो अधिकांश बच्चों के चेहरे पर खुशी का भाव देखा जा सकता था, क्योंकि ज्यादातर बच्चों के अंक बहुत अच्छे थे और वे इस बात से बहुत खुश थे, पर जब बच्चों की उत्तर पुस्तिका को वापस लिया जा रहा था, तो शिक्षिका ने दिव्या के चेहरे पर एक अलग सी उदासी महसूस की।

दिव्या के अंक 60 में से 47 थे, जो कि इतने कम नहीं थे। दिव्या बहुत ही समझदार बच्ची थी, शिक्षिका ने अपने मन ही मन दिव्या की उदासी का कारण खोजने का प्रयास किया। उस समय शिक्षिका के दिमाग में कुछ नहीं आया और वह सबके सामने दिव्या से कुछ पूछना भी नहीं चाहती थी। विद्यालय में सोचने के बाद भी शिक्षिका को समझ नहीं आ रहा था कि अपने अंकों को देखकर दिव्या उदास क्यों थी?

घर आने के बाद भी दिव्या की शिक्षिका के मन में उसका चेहरा घूम रहा था और वह मन ही मन इसके बारे में सोच रही थी। तभी शिक्षिका को याद आया कि जब पिछले हफ्ते बच्चों को हिन्दी विषय के अंक बताए गए थे, तब दिव्या के अंक 52 थे और दिव्या बहुत ही खुशी के साथ यह बोल रही थी, कि उसके पापा ने बोला है कि यदि वह हर विषय में 50 से ऊपर अंक लाएगी, तो वे उसके सारे सपने पूरे करेंगे। उसके पापा उसके इतने अच्छे अंक देखकर बहुत खुश होंगे।

इस बात की याद आते ही, शिक्षिका को आज दिव्या की उदासी का कारण समझ में आ गया। शायद उसके मन में यही चल रहा था, कि पर्यावरण अध्ययन में अंक 50 से कम रह गए हैं, ऐसे में शायद वह अपने पापा को इतना खुश न कर पाए और पापा खुश नहीं हुए तो फिर सपनों का क्या होगा?

इसी बात को ध्यान में रखते हुए, अगले दिन शिक्षिका ने सभी बच्चों के साथ एक चर्चा की और चर्चा का मुद्दा था, 'अंक कितने जरूरी', केवल दिव्या के लिए नहीं बल्कि सभी बच्चों के लिए, इस चर्चा का होना बहुत आवश्यक था ताकि सभी बच्चों और उनके परिवारों तक यह संदेश पहुँचाया जा सके कि हमेशा अंक महत्त्वपूर्ण नहीं होते। महत्त्वपूर्ण होते हैं, हमारे द्वारा किए गए प्रयास, हमारे द्वारा की गई मेहनत, केवल एक विषय या परीक्षा में हमारी सोच के अनुसार अंक नहीं आना हमारे भविष्य की उपलब्धियों को निर्धारित नहीं करता।

परीक्षा छोटी हो या बड़ी, इतनी अहम कभी भी नहीं होती कि हमारे सपनों को तोड़ सके। यदि कभी किसी परीक्षा में अंक कम रह भी जाएँ, तो निराश होने के स्थान पर जरूरी है कि हम उम्मीद की किरण जगाए और फिर से मेहनत करें। आज हमारे समाज में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जो यह बताते हैं कि मात्र अंकों के कम होने से सपने नहीं टूटा करते।

बच्चो! ऐसे बहुत से अधिकारी, खिलाड़ी और सफल व्यक्ति हमारे समाज में हैं, जो अपने स्कूल की पढ़ाई या कॉलेज की पढ़ाई में सामान्य अंकों से पास हुए थे या फिर कुछ तो ऐसे भी हैं जो फेल हो गए थे, पर उन्होंने परिस्थितियों का सामना किया और हार नहीं मानी।

देखें पृष्ठ 33.....

दस सवाल दस जवाब

(1) अक्टूबर में जन्में इन महापुरुषों के नाम बताओ।
(2) लाल बहादुर शास्त्री का प्रिय नारा क्या था?
(3) भारत के प्रथम उप प्रधानमन्त्री कौन थे ?
(4) एपीजे अब्दुल कलाम को किस विशेष नाम से जाना जाता है?
(5) आचार्य तुलसी ने वर्ष 1949 में कौनसा आन्दोलन प्रारम्भ किया?
(6) एस. चन्द्रशेखर को किस क्षेत्र के लिए नोबल पुरस्कार मिला?
(7) भारत रत्न से सम्मानित किस महापुरुष ने 'सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन' चलाया?
(8) 'विश्व शिक्षक दिवस' कब मनाया जाता है?
(9) किस भारतीय वैज्ञानिक को 'परमाणु ऊर्जा का जनक' माना जाता है?
(10) 'सत्य के प्रयोग' इस पुस्तक के लेखक कौन थे?

उत्तर इसी अंक में

- अध्यापक : सोहन, तुम होमवर्क करके लाए हो?
सोहन : जी नहीं।
अध्यापक : क्यों नहीं करके लाए हो?
सोहन : जी मैं घर में नहीं होस्टल में रहता हूँ।

- ग्राहक : यह क्या? चीनी की बोरी पर नमक लिखा है।
दुकानदार : चुप रहो! ये तो मैंने चीटियों को धोखा देने के लिए लिखा है।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

कल्पना ही समस्त विश्व का संचालन करती है।

❖

किसी कार्य को सुचारु रूप से करने के लिए मानव को उसे स्वयं करना चाहिए।

❖

वे व्यक्ति तेजी से आगे बढ़ते हैं जो अकेले चलते हैं।

❖

बुद्धिमान वही है जो पूर्ण संकल्प से कार्य को निपटाना जानता है।

– नेपोलियन बोनापार्ट

आँगनजाई, चिड़ी कहाई

आँगनजाई, चिड़ी कहाई,
ची ची ची ची चहचहाई।
वन में ना रहने का ठाना,
इसीलिए हमरे सँग धाई।

काम धाम बिलकुल ना भाता,
बाहर गई कि वापस आई।
एक आती दूजी को लाती,
एक जाती दूजी उड़ जाई।

पढ़ती लिखती नहीं किताबें,
अली-गली में नीड़ निराई।
अजब गजब है शौक तुम्हारे,
बरखा धूल, शीत जल नहाई।

सबने कितने कपड़े बदले,
तुम वैसी की वैसी भाई।
दर्पण तुमको दुश्मन लगता,
टींच-टींच के चोंच तुड़ाई।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'
उदयपुर (राजस्थान)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

व्योम का उपवन

व्योम के मन में एक सवाल कई दिनों से बहुत उथल–पुथल मचा रहा था। उसने देखा कि दादाजी सूर्य की ओर मुख करके कुछ बोलते हुए रोज प्रातःकाल एक लोटा जल चढ़ाते हैं। उसने अपनी मम्मी से पूछा– "माँ, दादाजी उगते सूर्य को देखते हुए रोज प्रातःकाल जल क्यों गिराते हैं? क्या सूर्य की प्यास बुझाने के लिए ऐसा करते हैं या अन्य कोई कारण हैं?"

उषारानी ने बताया– "तुम्हारे दादाजी सूर्य को परम–शक्ति मानते हैं क्योंकि सूर्य ही हमारे जीवनदाता हैं। सूर्य यदि दस दिन न निकलें तो हाहाकार मच जाएगा।" "पर माँ, सूर्य तो एक तारा है, हमारी आकाशगंगा का। पृथ्वी एक ग्रह है। चन्द्रमा पृथ्वी का एक उपग्रह है। ऐसा मैंने पढ़ा है अपनी कक्षा सात की पाठ्यपुस्तक में। क्या यह सही नहीं है?" उषारानी ने सवाल को टालते हुए अपने काम में लग गई।

व्योम की जिज्ञासा दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी। उसने एक दिन अपनी शाला के क्लॉस टीचर से भी दादाजी वाला प्रश्न पूछ ही लिया। क्लॉस टीचर ने व्योम को बताया– "यह तो बेटा आस्था और परम्परा की बात है। तुम्हारे दादा सूर्य को परमशक्ति मानते हैं अतः वे रोज जल चढ़ाकर उनसे प्रार्थना करते हैं। वे बुजुर्ग व अनुभवी हैं, कभी उनसे भी पूछ कर देखना।"

अब व्योम दादाजी से इस प्रश्न का उत्तर पूछने के लिए अवसर खोजने लगा। वह अपनी धुन का पक्का था और दादाजी की सेवा में जुट गया। कभी उनका चश्मा ढूँढ़ कर फौरन ला देता तो कभी उनकी दवाओं की पोटली। अब वह अकसर पूछा करता– "दादाजी प्यास तो नहीं लगी है? मैं पानी ला देता हूँ।"

व्योम दादाजी की सेवा बड़ी तत्परता से कर रहा था। दादाजी उसकी सेवा से बहुत खुश थे। दादाजी को प्रसन्न देखकर एक दिन व्योम ने उनसे पूछ ही लिया– "दादाजी! एक प्रश्न पूछूँ, नाराज तो नहीं होंगे?" दादाजी ने मुस्कुराते हुए कहा– "नहीं बेटे! पूछो जो पूछना है। मैं उत्तर दूँगा। तुम तो मेरे जिगर के टुकड़े

हो, लाल।" व्योम का प्रश्न था– "दादाजी, आप प्रातःकाल स्नान करके सूर्य को रोज जल क्यों चढ़ाते हैं? जल चढ़ाते समय कुछ बुदबुदाते भी हैं। मम्मी कह रही थीं कि आप सूर्य को एक परमशक्ति मानते हैं। मैंने तो पढ़ा है कि वह एक तारा हैं और पृथ्वी एक ग्रह है। चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है जो कि पृथ्वी का चक्कर लगा रहा है।"

दादा ने थोड़ी देर सोचा और बोले– "बेटा व्योम, मैंने भी यह सब पढ़ा था। मैं बी.ए. तक पढ़ा हूँ। आज विज्ञान का युग है। तुम्हारी सारी बातें सही हैं परन्तु मुझे सूर्य को जल चढ़ाने एवं अपनी प्रार्थना से एक सन्तोष मिलता है। एक विशेष प्रकार की आनन्दानुभूति होती है।" व्योम ने कहा– "दादाजी क्या यह अवैज्ञानिक नहीं है?" दादाजी ने उत्तर दिया– "बेटा, यह अवैज्ञानिक नहीं है। अपितु मेरी प्रबल आस्था है। मैं सूरज को जीवनदाता मानता हूँ जो वैज्ञानिक दृष्टि से पूरी तरह सही है। रही बात जल चढ़ाने की तो मैं बताऊँ कि प्रातःकाल के सूर्य दर्शन से हमें विटामिन डी भरपूर मात्रा में प्राप्त होती है।"

मैं तुम्हें अपने जीवन की एक सच्ची घटना बताता हूँ– "लगभग बीस साल पहले फिसल कर गिरने से मेरे दाहिने पैर में एक बड़ा फ्रैक्चर हो गया था। डॉक्टर ने खून की जाँच कराई और बताया कि मेरे शरीर में विटामिन डी की बहुत कमी है। उस कमी को दूर करने के दो रास्ते हैं। एक, उसके लिए गोलियाँ खाई जाएँ और दूसरा, प्रातःकाल के सूर्य की किरणों का सेवन किया जाए। तब से मैं प्रतिदिन प्रातःकाल नहा धोकर सूर्य को जल चढ़ाता हूँ और थोड़ी देर धूप में बैठकर अखबार पढ़ता हूँ।" व्योम ने दादाजी की बात ध्यान से सुनते हुए कहा– "पर दादाजी, जो पानी आप सूर्य को चढ़ाते हैं, वह जमीन में बह जाता है। पानी की वैसे भी बहुत कमी है। यह तो पानी का अपव्यय है। इसके बजाय यहाँ हम नए पेड़–पौधे लगा सकते हैं, जिनको प्रतिदिन पानी मिलता रहेगा।"

व्योम ने आगे दादाजी को सुझाया– "हमारे सामने पूरब दिशा में जो खाली जमीन पड़ी है, उसमें हर साल कुछ नए पेड़ लगा सकते हैं। आपके जल चढ़ाने से पेड़ों को प्रतिदिन पानी मिलता रहेगा। इस तरह से धीरे–धीरे खूब सारे पेड़ लग जाएँगे। एक हरा–भरा उपवन तैयार हो जाएगा। सुबह–सुबह पौधे को पानी पिलाने से विटामिन डी भी मिलता रहेगा।"

दादाजी को व्योम की बात बहुत पसन्द आई। उन्होंने कहा– "बेटा, तुमने तो मेरे मन में रोशनी की नई लौ जला दी है। आज ही शाम को चल कर नर्सरी से आँवला, नींबू, अमरूद, गुड़हल और नीम आदि के कुछ पौधे खरीद लाते हैं। कल से मैं प्रतिदिन उनको पानी दूँगा। हर साल हम कुछ नए पौधे लगाएँगे। इन पेड़ों का एक नया परिवार तैयार हो जाएगा। मैं उस उपवन का नाम 'व्योम का उपवन' रखूँगा।"

दादाजी ने आगे कहा– "धन्य हो, बेटे व्योम। आज तुमने मुझे पानी के सदुपयोग, फल–फूल उगाने और हरियाली बढ़ाने के बारे में बहुत अच्छी राय दी। काश, मैंने ऐसा पहले सोचा होता?" ऐसा कहते हुए दादाजी ने व्योम को बड़े प्यार से अपनी ओर खींच कर छाती से चिपका लिया। व्योम भावविभोर था। व्योम की माँ, उषारानी किचन से यह सारा दृश्य एकटक देख रही थीं।

श्यामपलट पांडेय
अहमदाबाद (गुजरात)

व्हाट्सएप कहानी

किसी गाँव में एक धनी व्यक्ति के पास बहुत कीमती घड़ी थी। यह घड़ी उसके पिता ने उसे दी थी। पिता की मृत्यु के बाद धनी व्यक्ति उस घड़ी को बहुत सँभालकर रखता था। लेकिन वह घर में घड़ी कहीं रखकर भूल गया। बहुत खोजने के बाद भी उसे घड़ी दिखाई नहीं दी।

धनी व्यक्ति निराश हो गया, वह घर के बाहर आकर बैठ गया। बाहर गाँव के कई बच्चे खेल रहे थे। धनी व्यक्ति ने सोचा कि बच्चों से बोल देता हूँ इतने बच्चे ढूँढ़ेंगे तो किसी न किसी को तो घड़ी मिल ही जाएगी। धनी सेठ ने बच्चों को बुलाया और बोला– ''मेरी घड़ी घर में कहीं खो गई है। तुम लोगों में से जो भी उस घड़ी को खोजकर लाएगा, मैं उसे बड़ा इनाम दूँगा।'' इनाम की बात सुनकर सभी बच्चे घर में घड़ी खोजने लगे।

बच्चों ने बहुत मेहनत की, लेकिन उन्हें घड़ी नहीं मिली। सभी निराश होकर सेठ के पास पहुँचे और बोला ''हमें तो घड़ी नहीं मिली है।'' ये सुनकर सेठ और दुःखी हो गया। बच्चे फिर से खेलने लगे। तभी वहाँ एक बच्चा लौटकर आया और बोला– ''मुझे एक बार फिर घड़ी ढूँढ़ने के लिए अन्दर जाने दीजिए, इस बार मैं घड़ी जरूर ढूँढ़ लूँगा।'' सेठ ने उस बच्चे की बात मान ली।

बच्चा घर में गया और कुछ देर में वह घड़ी लेकर बाहर आ गया। सेठ घड़ी देखकर हैरान था। उसने बच्चे से कहा– ''मैंने पूरे घर में इसे खोजा था, फिर सभी बच्चों ने भी इसे ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन किसी को घड़ी दिखाई नहीं दी। तुमने इसे कैसे ढूँढ़ लिया?'' लड़के ने कहा– ''मैं घर के अन्दर गया और एक जगह चुपचाप खड़ा हो गया। इसके बाद मैंने ध्यान से सुनने की कोशिश की, तभी मुझे घड़ी की टिक–टिक की आवाज सुनाई दी। मैं इस आवाज की दिशा में घड़ी को खोजने लगा और तुरन्त ही घड़ी मुझे मिल गई।''

जब हमारा मन शान्त होता है तो एकाग्रता बढ़ती है। एकाग्र मन से किए गए काम में बहुत जल्दी सफलता मिल सकती है। इसीलिए कोई भी काम करते समय मन को शान्त रखना चाहिए।

'अंक कितने जरूरी' पृष्ठ 28 का शेष...

रुक्मिणी रियार जो पढ़ाई–लिखाई में औसत थी और एक बार स्कूल में फेल भी हुईं, लेकिन इसके बाद वे मेहनत कर के पहले प्रयास में ही में यूपीएससी की परीक्षा पास करके आईएएस बनी। सचिन तेंदुलकर ने 16 वर्ष की आयु में देश के लिए पहली बार क्रिकेट खेला और क्रिकेट में व्यस्तता की वजह से वे दसवीं में फेल हो गए थे, उसके बाद उन्होंने अपनी स्कूली पढ़ाई छोड़ दी थी। पर आज उन्हें कौन नहीं जानता?

मध्य प्रदेश के मनोज कुमार शर्मा ने बचपन से ही आईएएस अधिकारी बनने का सपना देखा था, पर उनके अंक हमेशा साधारण या उससे भी कम ही आते थे। बारहवीं कक्षा में तो वे फेल भी हो गए। लेकिन कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने खुद पर भरोसा रखा और अपनी मेहनत और लगन से यूपीएससी की परीक्षा पास की और आईपीएस अधिकारी बने। ऐसे अनगिनत उदाहरण आपको इंटरनेट के माध्यम से मिल जाएँगे।

इसलिये हमेशा याद रखें, अपनी मेहनत और सकारात्मक सोच पर विश्वास रखें और कभी भी किसी भी परीक्षा में कम अंक आने से इतने उदास न हो। अपनी गलतियों पर ध्यान दें। क्या सीखने में कमी रह गई इस पर ध्यान दें। अपनी गलतियों से सीखे और नए अवसरों का खुशी से स्वागत करें।

नेहा गुप्ता
दिल्ली

मेरा देश : गाँव विशेष–10

नन्हे दोस्तो! अगर हम कहें कि गुजरात में स्थित जम्बूर गाँव भारत का मिनी अफ्रीका है तो गलत नहीं होगा। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि इस गाँव में 200 साल पहले से अफ्रीकी लोग रहते हैं। जो अपनी भाषा छोड़कर गुजराती भाषा बोलना पसन्द करते हैं।

मिलनसार स्वभाव – यह गाँव पर्यटकों के बीच प्रसिद्ध है, क्योंकि सिद्धी जनजाति के लोग अफ्रीकी नहीं बल्कि गुजराती बोलते हैं। यहाँ आने वाले ज्यादातर पर्यटक इन लोगों के साथ हिन्दी भाषा में ही बातचीत करते हैं। जाहिर है, इनकी हिन्दी भी अच्छी है। लेकिन इन सबके बावजूद इन्होंने अपना मूल स्वभाव नहीं छोड़ा है। ये कई अफ्रीकी परम्पराओं का पालन करते हैं।

जूनागढ़ के नवाब ने बसाया – दरअसल ये सिद्धी जाति के लोग हैं। माना जाता है कि जूनागढ़ के नवाब द्वारा अफ्रीका के सिद्धियों को गुजरात लाया गया था। उन्होंने गुलामों के तौर पर इन लोगों को यहाँ के राजा–महाराजाओं के पास सौंप दिया था। बस तभी से ये लोग यहाँ बस गए।

मुश्किल जीवन जीने के अभ्यस्त– एक जंबूर निवासी का जीवन आपके जीवन से काफी भिन्न हो सकता है। कई परिवारों के पास बिजली बहुत कम है या फिर है ही नहीं है। ये लोग रोशनी के लिए मिट्टी के तेल पर निर्भर हैं। पहले इनके पास दवा या स्वास्थ्य सेवा तक बहुत कम पहुँच थी। अब स्थिति पहले से बेहतर है।

भारत के कई हिस्सों में मिलेंगे सिद्धी – देखा जाए, तो पूरे भारत में आज करीब 25000 सिद्धी मौजूद हैं। इनमें कई ऐसे लोग भी हैं, जो हिन्दू धर्म को बहुत ज्यादा मानते हैं। कर्नाटक में मौजूद सिद्धी जनजाति के लोग कोंकण भाषा बोलते हैं और गोवा के आसपास के इलाकों में भी इन लोगों को देखा जाता है।

अपनी संस्कृति से जुड़ाव – ये लोग भले ही गुजरात में रहकर गुजराती बोलते हैं, लेकिन जब खुशी जाहिर करने की बात आती है, तो अफ्रीका का कल्चर ही अपनाते हैं। खुशी के मौके पर ये लोग अफ्रीकी डांस करते हैं। यह उनकी आजीविका चलाने का साधन भी है। आपको जानकर हैरत होगी कि गुजराती बोलने के साथ ये लोग गुजराती खाना भी बहुत बनाते हैं। ज्यादातर लोगों को गुजराती खाना बहुत पसन्द है। इन लोगों की खासियत है कि ये किसी अन्य धर्म में शादी नहीं करते। इसी कारण ये लोग अफ्रीकी लोगों की ही तरह दिखते हैं।

पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र – यह क्षेत्र अपने अनूठे इतिहास के साथ–साथ अपने खूबसूरत परिदृश्य के कारण पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। साथ ही यह अपनी अनूठी जीवन शैली के लिए पर्यटकों का ध्यान आकर्षित कर रहा है, जो अफ्रीकी गाँवों से मिलती जुलती है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

भारत का मिनी अफ्रीकी गाँव

कला की परख

कुशपुर नामक एक छोटा राज्य था। वहाँ का राजा था– श्रीधर। वह एक पैर से लँगडाता था, किन्तु था बड़ा वीर। उसके पड़ोसी राज्य बड़े–बड़े थे। कुशपुर की स्वतन्त्रता उनकी आँखों में किरकिरी सी चुभती थी। कई बार पड़ोसी राजाओं ने कुशपुर को जीतकर अपने राज्य में मिला लेने के लिए चढ़ाई की, परन्तु अपनी बहादुरी के बल पर श्रीधर ने अपने राज्य को हर बार बचा लिया।

एक दिन श्रीधर ने सोचा– ''मुझे आए दिल लड़ाइयाँ लड़नी पड़ती हैं। हो सकता है कि मैं किसी दिन लड़ाई में मारा ही जाऊँ। अभी मेरे बच्चे छोटे–छोटे हैं। बड़े होने पर जब कभी देश की स्वतन्त्रता खतरे में पड़ेगी, तब वे बहादुरी से लड़ने की प्रेरणा किससे प्राप्त करेंगे?'' श्रीधर कई दिन तक इस विषय पर सोचता रहा। अन्त में उसने अपना एक कलात्मक और प्रेरणादायक चित्र बनवाने का निश्चय किया। उसका विचार था– "मेरे न रहने पर बच्चे चित्र देख, मेरे बारे में जानेंगे और प्रेरणा लेंगे।"

श्रीधर ने इस सम्बन्ध में ढिंढोरा पिटवा दिया। उसकी राजधानी में रामदत्त, सोमदत्त और रविदत्त नामक तीन चित्रकार रहते थे। उन तीनों को जब श्रीधर की चित्र बनवाने की इच्छा का पता चला, तो दूसरे दिन वे राजदरबार में पहुँचे। उन तीनों को एक साथ देखकर श्रीधर सोच में पड़ गया। उसे चित्र बनवाना था एक, चित्रकार थे तीन। उसके सामने विचित्र समस्या आ खड़ी हुई। थोड़ी देर सोचने के बाद उसे एक उपाय सूझा। उसने चित्रकारों से कहा– ''तुम तीनों मेरा एक–एक चित्र बनाकर लाओ। जिसका चित्र कलात्मक एवं प्रेरणादायक होगा, उसे मैं पुरस्कार देकर सम्मानित करूँगा।"

प्रसन्न मन से तीनों चित्रकार अपने–अपने घर चले गये। पुरस्कार पाने की ललक उनके मन में थी। वे चित्र बनाने की तैयारी में जोर–शोर से जुट गये। रामदत्त का चित्र सबसे पहले पूरा हुआ। उसके चित्र में श्रीधर लम्बे–चौड़े भव्य सिंहासन पर बैठा था। सिंहासन के चारों ओर हीरे मोतियों की जगमगाती हुई झालर लटक रही

थी। चित्र में श्रीधर का रंग चमकदार गोरा था। चेहरा रोबीला और शरीर पहलवानों जैसा भारी–भरकम। लँगड़ी टाँग गायब थी। उसकी जगह अच्छी भली टाँग बनी थी। भड़कीले रंगों से बनाया गया वह चित्र आकर्षक लग रहा था।

ऐसा सुन्दर चित्र बनाकर रामदत्त की खुशी का ठिकाना न था। वह चित्र ले, रास्ते भर सोचता आया था, चित्र देखते ही राजा प्रसन्न हो जायेंगे। हुआ एकदम उल्टा। चित्र देखते ही श्रीधर भड़क उठा। वह कोई बड़ा सम्राट तो था नहीं। एक छोटे से राज्य के राजा के पास सोने का भव्य सिंहासन और हीरे–मोतियों की झालर होने की कोई तुक नहीं थी। बेतुकी बातों से उसे चिढ़ थी। सब कुछ तो वह सहन कर गया, लेकिन जब उसकी निगाह पैरों पर पड़ी, तो वह क्रोधित हो उठा। उसने चित्र रामदत्त के ऊपर फेंककर कहा– ''तुम मुझे मूर्ख बनाकर पुरस्कार ऐंठना चाहते हो। क्या मैं ऐसा हूँ जैसा तुमने चित्र में दिखा दिया है? इसमें मेरी लँगड़ी टाँग कहाँ है?''

रामदत्त को कोई जवाब न सूझा। उसने श्रीधर से क्षमा माँगी। अपनी करनी पर पछताता घर लौट गया। यह सोमदत्त को पता चला। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई उसने सोचा– ''राजा असलियत की कद्र करता है। मेरा बनाया चित्र उसे अवश्य पसन्द आयेगा।'' उसने जो चित्र बनाया, उसमें श्रीधर की पूरी छाप उतर आई थी। साँवला रंग, साधारण चेहरा और औसत दर्जे का शरीर। वह चित्र में अपने छोटे से दरबार में नक्काशीदार लकड़ी के सिंहासन पर बैठा था। कहीं कोई ऐसी विशेष बात नहीं थी, जिससे असली राजा और चित्र के राजा में किसी तरह का अन्तर मालूम पड़ता।

सोमदत्त उमंग से भरा राजदरबार में पहुँचा। चित्र श्रीधर के हाथ में थमा दिया। वह थोड़ी देर तक चित्र को देखता रहा। फिर बोला– ''चित्र है तो ठीक, लेकिन इसमें कला नहीं है। इसे देखकर हमारी आने वाली पीढ़ी क्या प्रेरणा लेगी? हूबहू किसी की सूरत की छाप उतार देना ही तो कला नहीं होती।''

सोमदत्त ने इस विषय में कुछ सोचा ही नहीं था। वह भी निराश होकर लौट गया। दोनों चित्रकारों की असफलता का हाल रविदत्त को मालूम हुआ। वह सोच में पड़ गया। आखिर ऐसी कौनसी बात है, जिसे राजा अपने चित्र में पाना चाहता है? वह सोचता रहा। दिन बीतते गये। इस बीच उसके मस्तिष्क में राजा के चित्र की आकृतियाँ बनती बिगड़ती रही। अन्त में एक सुबह वह अपनी रंगशाला में गया। उसने प्यालों में रंग तैयार किया। कूँचियाँ साफ की और चित्र बनाने में जुट गया। दिन बीत गया। रात घिर आई, लेकिन वह चित्र बनाने में लगा रहा। दूसरी सुबह वह रंगशाला से बाहर आया। अब उगते सूरज की तरह ही वह प्रफुल्लित था।

रविदत्त का चित्र पूरा हो गया था। वह चित्र लेकर राजा श्रीधर के पास पहुँचा। राजा ने लेकर देखा। चित्र में वह एक घोड़े पर सवार था। उसके एक कंधे पर धनुष और दूसरे पर तीरों से भरा तरकश लटक रहा था। कमर के दोनों तरफ एक–एक लम्बी म्यान लटकी थी। घोड़े की गर्दन के पास रानी खड़ी थी। उनके हाथ में चमकती हुई थाली थी। वह युद्ध में जाने के लिए तैयार पति की आरती कर रही थी, चित्र में एक विशेष बात यह थी कि रानी राजा की लँगड़ी टाँग के सामने खड़ी थी, इससे उसका लँगड़ापन भी छिप गया था।

कुछ देर अपलक देखने के बाद सहसा श्रीधर प्रसन्न होकर बोला– ''इसे कहते हैं कला। इतनी चतुराई से मेरा लँगड़ापन छिपा दिया गया है कि कोई भाँप नहीं सकता है। साथ ही यह प्रेरणादायक भी है। इसे देखकर हमारे वंशज देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने की प्रेरणा भी प्राप्त करते रहेंगे।'' श्रीधर ने ढेर सारा पुरस्कार देकर रविदत्त को खुश कर दिया।

चित्रेश

सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश)

सत्य की सीख

आज मानसी बहुत खुश थी....उसे अगले सप्ताह बुधवार को स्कूल की नृत्य प्रतियोगिता में चुन लिया था। घर के अन्दर आते ही उसने यह बात मम्मी को बताई और मम्मी से कहा कि– ''मिस ने कहा है गांधी जयन्ती को अच्छे कपड़े पहन कर स्कूल जाना है।'' शाम को पापा के आते ही गले लिपट कर पापा को भी बताई।

मानसी अभी कक्षा दो में शहर के सेंट फ्रांसिस स्कूल में पढ़ती थी। पापा से मानसी ने अपनी खुशी जाहिर करने के बाद पूछा– ''अच्छा पापा यह बताओ कि यह गांधी जी कौन थे? स्कूल में मिस भी आज गांधी जी के बारे में बता रही थी कि परसों गांधी जी का जन्मदिन है। पर उनका जन्मदिन पूरे देश में क्यों मनाया जाता है?''

''हाँ बेटा!'' मानसी के पिता कैलाश जी ने कहा– ''गांधी जी हमारे देश के राष्ट्रपिता कहे जाते हैं। उन्होंने सत्य अहिंसा के बल पर देश को आजाद कराया था। उनका जन्मदिन बड़े धूमधाम से हम सभी सभी देशवासी मनाते हैं। हमें गांधी जी के रास्ते पर चलना चाहिए। कभी झूठ नही बोलना चाहिए। इससे हम जीवन में आगे बढ़ेंगे।''

दूसरे दिन रविवार था। मानसी सुबह अपना होमवर्क कर रही थी। इतने में पापा का मोबाइल बजने लगा। पापा सो रहे थे। मानसी ने पापा को जगाया, तब तक फोन कट गया। मानसी के पापा ने फोन में देखा तो उनके बॉस का फोन था। आज बॉस ने छुट्टी के दिन ऑफिस आने के लिए कहा था। क्योंकि सोमवार को डीएम साहब का ऑफिस में दौरा था जिसके लिए तैयारी करनी थी। इतने में फिर मोबाइल बज उठा। मानसी को मोबाइल देते हुए कैलाश जी ने कहा कि– ''बेटा बोल दो कि पापा को बुखार है। पापा सो रहे हैं।'' खैर मानसी ने काल रिसीव करते हुए बताया कि– ''अंकल जी नमस्ते! पापा को बुखार है। पापा सो रहे हैं।'' जब फोन कट गया मानसी बहुत आश्चर्य चकित हुई और बोली– ''पापा कल रात में ही तो आप कह रहे थे कोई भी मुश्किल हो, झूठ नहीं बोलना चाहिए। सदैव सच बोलना चाहिए, पर अभी तो आप अंकल से बोलने के लिए कह रहे कि आपको बुखार है और आप सो रहे हैं जबकि आप को न तो बुखार है न ही आप सो रहे है। आप मुझसे हमेशा सच बोलने के लिए कहते हैं। फिर आप खुद ही झूठ!''

इतना सुनते ही कैलाश जी का चेहरे का रंग उड़ गया। मुँह से कुछ बोला ही नही जा रहा था। बड़ी मुश्किल से बोले– ''बेटा! मुझे माफ़ कर दो।'' सच है, सत्य बोलकर ही सत्य की शिक्षा दी जा सकती है।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
भवानीपुर बस्ती (उत्तर प्रदेश)

विश्व विरासत स्थल-1

आगरा का किला

प्यारे बच्चो! आपने लालकिला, कुतुब मीनार, ताजमहल, जामा मस्जिद, विजय स्तम्भ, जन्तर–मन्तर आदि के बारे में तो जरूर पढ़ा और सुना होगा। हमारे देश के प्राचीन मन्दिर, अजन्ता–एलोरा की गुफाएँ, सभ्यता–संस्कृति के अवशेष और वन्य जीवों के संरक्षण स्थल का रखरखाव भारत सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा किया जाता है। क्या आप जानना चाहेंगे कि विश्व स्तर पर इन सबकी देखभाल का कामकाज किस संस्था के द्वारा किया जाता है :–

संयुक्त राष्ट्र संघ के अभिकरण यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) द्वारा विश्व के सभी देशों में सभ्यता–संस्कृति, इतिहास–स्थापत्य, प्राकृतिक पर्यावास और दुर्लभ कलाकृतियों को संरक्षित करने का काम किया जाता है। इसके द्वारा प्रतिवर्ष विश्व विरासत सूची में नये स्थलों का चयन एक समिति द्वारा किया जाता है। अभी तक 1154 स्थलों को इस सूची में शामिल किया गया है।

भारत के विश्व विरासत स्थल :– 1983 ई. से अब तक भारत के कुल 40 स्थलों को इस सूची में शामिल किया गया है। सर्वप्रथम 1983 ई. में आगरा का किला, ताजमहल, अजन्ता और एलोरा की गुफाओं को विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था। इस आलेख श्रृंखला में हम आपको आगरा का किला की सैर पर लिए चलते हैं ।

आगरा का किला उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा शहर में स्थित है। इस किले का प्रथम विवरण 1080 ई. में महमूद गजनवी के आक्रमण के समय मिलता है। यह किला मूलतः ईंटों से बनवाया गया था। 1504 ई. में सिकन्दर लोदी ने इस किले की मरम्मत कराई थी। इतिहासकार अबुल फजल ने लिखा है– "यह किला ईंटों का किला था, जिसका नाम बादलगढ़ था। यह तब खस्ता हालत में था व अकबर को इसे दोबारा बनवाना पड़ा जो कि उसने लाल बलुआ पत्थर से निर्मित करवाया।"

यह किला 1573ई. में बनकर तैयार हुआ। इसे लाखों मजदूरों ने रात–दिन परिश्रम करके आठ वर्ष में तैयार किया। इसका नक्शा स्वयं अकबर ने तैयार किया था और अपनी देखरेख में इसे बनवाया था। इसका घेरा डेढ़ मील का है। इसके दो द्वार हैं– दिल्ली द्वार और अमर सिंह द्वार। दिल्ली द्वार को हाथी द्वार भी कहा जाता है। इस किले की वास्तुकला पर हिन्दू–ईरानी शैली की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है।

आओ! अब किले के अन्दर चलते हैं और आपको महत्त्वपूर्ण इमारतों के दर्शन करवाते हैं। अकबरी महल, जहाँगीरी महल, खास महल,

देखें पृष्ठ 40...

जीत का रहस्य

यह एक प्राचीन घटना है। शेरगढ़ के राजा शेरसिंह थे। उन्हें सब तरह के खेलों से बहुत लगाव था। वह अपने राज्य में हर साल पन्द्रह दिनों के लिए खेलों का आयोजन करते थे। तैराकी, घुड़दौड़, कुश्ती, मुक्केबाजी, तीरन्दाजी, गेंद के खेलों के अलावा और भी नये–नये प्रकार के मुकाबले होते।

इस साल के खेल समारोह की तैयारियाँ हो रही थी। दूर–दराज और आसपास के खिलाड़ी इकट्ठे हो रहे थे। अपनी–अपनी रुचि के खेलों में भाग लेने के लिए, वे अपने नाम लिखा रहे थे। नाम लिखाने का अन्तिम दिन था। उसी दिन मरियल–सा एक युवक वहाँ पहुँचा। उसका नाम था– बलवीर। उसने अपना नाम तो सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए लिखा दिया। पर उसने एक अनुरोध भी किया– "मैं सबके बाद में नाम लिखा रहा हूँ, सो मुझे हर खेल के आखिर में ही अवसर देने की कृपा करें।''

यह कोई एतराज की बात न थी। प्रतियोगिताएँ होने लगी। तीर चलाकर एक ऊँचे वृक्ष की टहनी को काटना था। हवा के झोकों से नाजुक टहनी हिल रही थी। एक के बाद एक निशानेबाजों ने निशाना साधा, पर कोई न काट सका। अन्त में बलवीर की बारी आई। दर्शकों ने हँसते हुए ताना दिया– "ओहो, ये नया तीरन्दाज क्या जाने, अचूक निशाना कैसे लगाते हैं?" लेकिन हुआ उल्टा, बलवीर ने निशाना साधकर तीर चलाया। उसके अचूक निशान से वृक्ष की टहनी पलक झपकते कटकर गिर पड़ी। उपेक्षा से उसे ताने सुना रहे, दर्शक प्रसन्नता के मारे तालियाँ पीटते हुए बोल पड़े– "वाह, वाह! शाबास, शाबास!"

प्रतियोगिताएँ होती रही, बलवीर हर मुकाबले में जीतता रहा। घुड़दौड़ का सबसे कठिन मुकाबला हुआ। कारण, घुड़सवारी आँखों पर पट्टी बाँधकर और हाथ बाँधे हुए करनी थी। कुशल धावक भी कोई इधर गिरा, कोई उधर जा पड़ा। अब सभी आश्चर्य में डूबे एकटक ताक रहे थे। अकेला बलवीर घोड़े को सरपट दौड़ा रहा था और कमाल है, उसने घुड़दौड़ की बाजी भी जीत ली।

महाराजा शेरसिंह खिलाड़ियों को पुरस्कार देने लगे। जब बलवीर को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का सर्वोच्च पुरस्कार देकर सम्मानित किया तब तो तालियों से वातावरण गूँज उठा।

किन्तु सब चकरा रहे थे, उत्सुक भी, आखिर है कौन–बलवीर? क्या इसमें किसी जादू से सब खेलों में विजय प्राप्त की है। ”वाह भई, खेलों के सिरमौर! हम जानना चाहते हैं कि तुम्हारी इस बेमिसाल जीत का रहस्य क्या है?” राजा ने पूछा। ”राजन, दृढ आत्म–विश्वास, आत्मबल और हर खेल में जीतने का प्रण मुझे विजेता बना देता है। जीत का कोई रहस्य नहीं है। वह केवल अत्यधिक अभ्यास और परिश्रम चाहती है।” बलवीर ने विनम्रता से बताया।

यह सुनकर महाराजा को बहुत खुशी हुई। कहा– ‘‘नौजवान बलवीर, खेल के शौकीन खिलाड़ी तो अनेक हैं, पर तुम्हारे जैसा आत्म–विश्वास से जीतने का प्रण करने वाला खोजने पर शायद ही मिलेगा। काश! बलवीर जैसा दृढ विश्वास और प्रण हमारे सभी खिलाड़ी अपने में जागृत कर सकें तो फिर उनके लिए चारों दिशाओं में जीत होगी और विश्व में नाम रोशन होगा।’’

सावित्री चौधरी
जयपुर (राजस्थान)

‘आगरा का किला’ पृष्ठ 38 का शेष

रंगमहल, शीशमहल, मुसम्मन बुर्ज, शाही बुर्ज, शाहजहाँ महल, मोती मस्जिद, मीना मस्जिद, मछली भवन और नौबत खाना विशेष रूप से दर्शनीय हैं। दीवाने आम और दीवाने खास के साथ मीना बाजार की रौनक जरूर देखिएगा। किले के अन्दर अंगूरी बाग इस विरासत स्थल को रमणीय बनाता है।

यह किला सुबह–शाम दोनों समय खुलता है। शाम को लाइट एंड साउंड शो भी होता है। यहाँ पर घूमने का सबसे बढ़िया समय नवम्बर से फरवरी तक माना जाता है।

नरेन्द्र सिंह ‘नीहार’
नई दिल्ली

प्रेरक प्रसंग

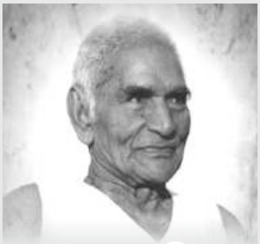

समर्पण

बाबा आमटे बरोरा नगरपालिका के अध्यक्ष थे। वे नगर के प्रसिद्ध वकील भी थे। बात उन दिनों की है जब सफाई कर्मचारियों ने नगर में हड़ताल कर रखी थी। बरसात का मौसम होने के कारण गन्दगी और बढ़ गयी थी। नगर में बीमारियाँ फैलने की आशंका थी। आमटे जी अपना दायित्व समझते थे, इसलिए ऐसी विषम स्थिति में उनसे रहा न गया। उन्होंने स्वयं शौचालयों की सफाई करना प्रारम्भ कर दिया।

इसी दौरान उन्हें बस्ती के बाहर अंधेरे में एक गठरी जैसी दिखायी पड़ी। निकट जाकर देखा तो पता चला कि वह गठरी नहीं वरन् एक कुष्ठ रोगी था। उसके हाथों और पैरों की अँगुलियाँ गल चुकी थीं। और वह पूरी तरह उपेक्षित सिमटा–सिकुड़ा पड़ा था। वह पीड़ा से कराह रहा था और लगता था कि मौत की प्रतीक्षा कर रहा है।

आमटे जी ने बेझिझक उस कुष्ठ रोगी को पीठ पर लादा और सुरक्षित स्थान पर ले आये। बाद में उन्होंने उसके लिए एक कुटिया बनायी। यद्यपि उन्होंने बड़ी लगन से उसकी सेवा सुश्रुषा की तथापि उसके प्राण न बच सके।

उसकी मृत्यु से आमटे जी को बड़ा दुःख हुआ। बाद में उन्होंने अपना सारा जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा में समर्पित कर दिया।

संजीव कुमार आलोक
बाढ़ (बिहार)

पढ़ो और जीतो

यहाँ दिये दस प्रश्नों के उत्तर इसी अंक की सामग्री पर आधारित है। आप पत्रिका पढ़ें और उनके सही उत्तर खोजकर एक कागज पर लिखें।अपना नाम, कक्षा, शहर व मोबाइल नं. भी इस पत्र पर लिखना है । उसका फोटो हमें व्हाट्सएप नं. 9351552651 पर दिनांक 12.10.23 तक भेजें।

1. गांधी जी अँग्रेजी का कौन सा शब्द शुद्ध नहीं लिख सके?
2. जन्मदिन पर उपकार का कौन सा काम करना चाहिये?
3. कौन सा रुपया खोटा माना गया और क्यों ?
4. अब्दुल हसन कौन सी प्रतियोतिगता में विजेता बने ?
5. गुलमोहर के कटे हुए भाग पर बच्चों ने क्या किया ?
6. मगरमच्छ के बच्चे को शाबासी क्यों मिली ?
7. 23 अगस्त 2023 को भारत को क्या विशेष उपलब्धि हुई ?
8. कैलाश जी के चेहरे का रंग क्यों उड़ गया ?
9. विश्व विरासत स्थलों की सूची में भारत के अब तक कितने स्थान शामिल हैं ?
10. अंक कितने जरूरी ? में लिखित विचारों से आप कहाँ तक सहमत है?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) आचार्य तुलसी (ब) लाल बहादुर शास्त्री (स) एपीजे अब्दुल कलाम (द) होमी जहाँगीर भाभा (2) जय जवान, जय किसान (3) सरदार वल्लभ भाई पटेल (4) मिसाइल मेन (5) अणुव्रत आन्दोलन (6) भौतिक विज्ञान (7) जय प्रकाश नारायण (8) 5 अक्टूबर (9) होमी जहाँगीर भाभा (10) महात्मा गांधी

अन्तर ढूँढ़िए

(1) साइकिल की सीट का रंग अलग (2) फुटबाल का आकार बड़ा (3) पतंग की एक पूँछ गायब (4) लड़की के जूते का रंग अलग (5) पेड़ पर नारियल अतिरिक्त (6) बैठे हुए लड़के का कान गायब (7) आसमान में बादल अतिरिक्त (8) हवाई जहाज का आकार बड़ा

दिमागी कसरत

सभी रिक्त स्थानों में एक शब्द भरा जाना है वह है :– डकार

बूझो तो जानें

(1) मच्छर (2) केंचुआ (3) मक्खी (4) मधुमक्खी (5) दीमक

बुद्धि की परख

मुँह कंगारु का, धड़ घोड़े का, पैर शेर के और पूँछ कुत्ते की है।

वर्ग पहेली

1 अ	2 लं	3 का	4 र	■	5 वा	च	6 क
7 म	का	न	मा	8 लि	क	■	र
र	■	भ	■	9 ख	या	10 न	त
11 कं	क	र	■	ना	■	12 गा	ल
ट	■	13 ना	14 प	■	15 हा	र	■
16 क	17 ला	■	18 र	19 ख	■	20 ची	21 न
■	22 ल	ल	का	र	23 ना	■	ह
24 मो	ची	■	25 र	च	ना	का	र

सुडोकू

6	4	7	8	1	5	2	3	9
8	9	3	6	2	4	7	1	5
2	1	5	3	9	7	4	8	6
4	3	1	2	8	9	6	5	7
7	2	6	4	5	3	8	9	1
5	8	9	7	6	1	3	4	2
1	7	4	9	3	2	5	6	8
3	5	8	1	7	6	9	2	4
9	6	2	5	4	8	1	7	3

त्वरिता दशोरा, कक्षा 5, नई दिल्ली

अत्रिज खरे, कक्षा 4, बेंगलूरु

हंसिका सिंह, कक्षा 5, अलीगढ़

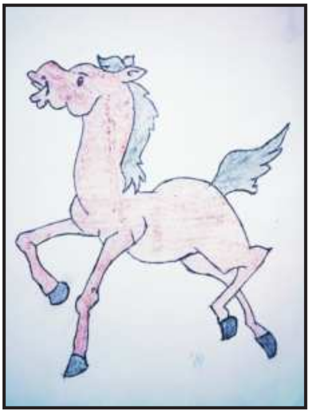

भूमिका सिंह, कक्षा 6, अलीगढ़

काव्या बछावत, कक्षा 8, बीकानेर

Lipan Art : Material required- MDF board, it is used for a base for the artwork, Line ceramic powder, it is a main ingredient in making this artwork. Some colours and mirrors are used for the decoration. It is art of Gujarat.

जन्मदिन की बधाई

14 अक्टूबर

मनकीरत सिंह, कक्षा 1, यमुनानगर (हरियाणा)

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

स्वस्छ हाथ : सेहत का राज

संगीता

गंगोत्री कुमारी

मोनिका कुमारी

गीता मीणा

आरती मीणा

शोभा मीणा

रवीना मीणा

सोना

पूजा, संगीता

पार्वती कुमारी

पायल मीणा

मनीषा, कृष्णा

: सामग्री सौजन्य :

आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- छोटी सादड़ी एवं पीपल खूँट

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

गुंजन ने फतह की 6000 मीटर की तीन चोटियाँ

गोवा की 12 साल की पर्वतारोही गुंजन पंकज प्रभु नार्वेकर ने 62.5 घंटे में लद्दाख क्षेत्र की माखां घाटी में 6000 मीटर से ज्यादा ऊँची तीन पर्वत चोटियों पर सफलतापूर्वक चढ़ाई कर नया रेकार्ड बना दिया। उसने तीन चोटियों माउंट कांग यात्से-2 (6250 मीटर), माउंट रेपोनी मल्लारी-1 (6097 मीटर) ओर माउंट रेपार्नो मल्लारी-2 (6113 मीटर) पर्वत शृंखलाओं पर चढ़ाई की।

पढ़ाई के लिए जज्बा चाहिये

मिजोरम के बुजुर्ग लालरिंगथारा 78 साल की उम्र में स्कूली शिक्षा पूरी कर रहे हैं। चम्फाई जिले के न्यू हुआइकोन गाँव के रहने वाले लालरिंगथारा ने स्कूली शिक्षा पूरी करने में उम्र को आड़े नहीं आने दिया। उन्होंने गाँव के राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) के तहत हाई स्कूल में कक्षा 9 में दाखिला लिया। लालरिंगथारा स्कूल यूनिफॉर्म पहनकर और किताबों से भरा बैग लटकाकर रोजना तीन किलोमीटर दूर स्कूल पहुँचते हैं।

सिंगापुर का 'द इंटरलेस'

सिंगापुर का 'द इंटरलेस' रेजिडेंशियल कॉम्प्लेक्स 170,000 वर्गमीटर का है जो डिपो रोड़ और एलेक्जेंड्रा रोड के कोने पर 8 हेक्टेयर भूमि पर स्थित है। पतली गगनचुंबी इमारत के बजाय क्रमिक स्टेपिंग प्रभाव पैदा किया गया है। इसमें छह-छह मंजिलों के 31 खूबसूरत अपार्टमेंट ब्लॉक बनाए, जिनमें बहुत सारे खुले स्थान और बाहरी हरे-भरे स्थान है। हर ब्लॉक के शीर्ष पर पेंट हाउस है।

नारियल के खोल से बनाई ज्वैलरी

तमिलनाडु के आर्टिस्ट जेया कूज को बचपन से आर्ट और क्राफ्ट का शौक रहा है। इसी शौक को उन्होंने गरीब महिलाओं को रोजगार दिलाने का जरिया बनाया। उन्होंने नारियल के खोल को ग्राइंडर की मदद से अलग-अलग तरह का आकार दिया। ज्वैलरी समेत कई तरह के प्रोडक्ट बनाएँ। फिर ये हुनर उन्होंने शहर और गाँव की उन महिलाओं को सिखाया जो जीवन में आगे बढ़ना चाहती थीं।

तीन गाँवों को किया रोशन

झुंझुनूं जिले के भूरासर का बास गाँव निवासी सुनील मांजू ने अपने गाँव के अँधेरे के कारण लोगों को परेशान देखकर प्रत्येक गली में सोलर लाइट लगवाने के बाद गाँव से सटे जीवा का बास और अम्बेडकर नगर में भी सोलर लाइट लगवाई है। एक लाइट पर सात हजार रुपए का खर्चा आया है। वह अब तक भूरासर का बास में 50, जीवा का बास में 7 और अम्बेडकर नगर में 8 सोलर लाइट लगवा चुका है। इस हिसाब से कुल 4 लाख 55 हजार रुपए की लाइट लगवाई है।

विशाल राखी का अनूठा रेकॉर्ड

इनरव्हील क्लब उदयपुर ने 20 अगस्त को चित्रकूट नगर स्थित रॉकवुड स्कूल परिसर में 3 हजार किलो अनाज से 20x22 फीट के फ्लेक्स पर अनूठी राखी बनाकर वर्ल्ड रेकॉर्ड बनाया। अहमदाबाद से आई वर्ल्ड रेकॉर्ड टीम ने क्लब एवं सहयोगी 40 सदस्यों को व्यक्तिगत सर्टिफिकेट प्रदान किए। इस राखी में सात प्रकार का 3 हजार किलो अनाज शामिल किया गया। बाद में इस अनाज का एक हजार जरूरतमन्द परिवारों में वितरण किया गया।

प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान

महत्त्व

प्रार्थना व्यक्ति के सकारात्मक भावों की अभिव्यक्ति है। प्रार्थना याचना नहीं, अपितु अपने अन्तःकरण के पवित्र भावों का प्रकटीकरण है। प्रार्थना केवल परम्परा का निर्वाह नहीं है, अपितु जागृत चित्त का संकल्प है। इसलिए विद्यालय में प्रतिदिन प्रार्थना की परम्परा रही है।

कार्यक्रम

जीवन विज्ञान के अन्तर्गत प्रार्थना सभा का एक निश्चित कार्यक्रम निर्धारित है। इसमें सभी छात्र–छात्राएँ प्रार्थना सभा में पंक्तिबद्ध सीधे खड़े रहें। विद्यार्थियों के मध्य आगे–पीछे और दाएँ–बाएँ एक हाथ का फासला रहे। छात्र–छात्राएँ जीवन विज्ञान गीत अथवा अणुव्रत गीत का सामूहिक समुच्चारण करें। इसके पश्चात् दिए गए क्रम में आसन, यौगिक क्रिया, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, प्रेक्षाध्यान, संकल्प और वन्दना का अभ्यास करें।

लाभ

1. प्रार्थना से समर्पण भाव आता है।
2. आसन–प्राणायाम से शरीर स्वस्थ और सहनशील बनता है।
3. कायोत्सर्ग और प्रेक्षाध्यान से मन शान्त और जागरूक बनता है।
4. संकल्प से सकारात्मक भाव उत्पन्न होते हैं।
5. वन्दना से विनय भाव प्रकट होता है।

आसन –1, समपादासन

1. दोनों पैरों को सटाकर, सीधे खड़े रहें। एड़ी व पंजे मिले हों।
2. पैर, रीढ़ और गर्दन तक पूरा शरीर सीधा रहे।
3. दृष्टि सामने किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित करें।
4. दोनों हाथों की हथेलियों को शरीर से सटाकर रखें। श्वास–प्रश्वास चलता रहे।

लाभ

1. आँखों की ज्योति बढ़ती है।
2. एकाग्रता बढ़ती है।
3. रक्त संचार सन्तुलित होता है।
4. थकान दूर होती है।

आसन –2, ताड़ासन

स्थिति : सीधे खड़े रहें। एड़ियाँ मिली रहें, पंजे खुले रखें। हाथों की अँगुलियों को एक–दूसरे में फँसाएँ। हथेलियों को पलट कर नाभि के नीचे रखें। (स्थिति–अ)

1. श्वास भरते हुए दोनों हाथों को सामने से ऊपर उठाएँ। बाँहें कानों का स्पर्श करें। (स्थिति–ब)
2. श्वास छोड़ते हुए पंजों के बल खड़े होकर शरीर को तनाव दें। दृष्टि सामने रखें।
3. श्वास भरते हुए एड़ियाँ भूमि पर रखें।
4. श्वास छोड़ते हुए हाथों को वापस नीचे लाएँ और शरीर को ढीला छोड़ दें।

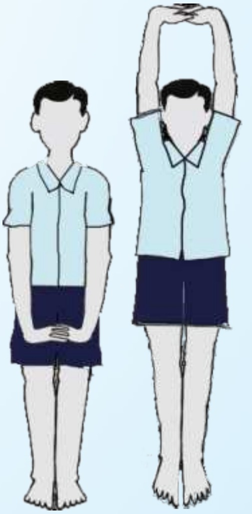

(अ) (ब)

लाभ

1. आलस्य दूर होता है।
2. लम्बाई बढ़ती है।
3. कब्ज दूर होती है।
4. तनाव दूर होता है।

आसन –3, कोणासन

स्थिति : सीधे खड़े रहें। एड़ियाँ और पंजे मिले हुए, दोनों हाथ शरीर से सटे रहें।

1. श्वास भरते हुए बायाँ हाथ सामने से धीरे–धीरे सिर की ओर ऊपर ले जाएँ। बाँह कान का स्पर्श करे।
2. श्वास छोड़ते हुए कमर, कंधे ओर गर्दन को दायीं ओर झुकाएँ। हाथ भी दायीं ओर सीधा झुकेगा। (दायाँ पैर मोड़ें नहीं।)
3. श्वास भरते हुए कमर, गर्दन व हाथ को सीधा करें।
4. श्वास छोड़ते हुए हाथ को धीरे–धीरे सामने से नीचे लाएँ।

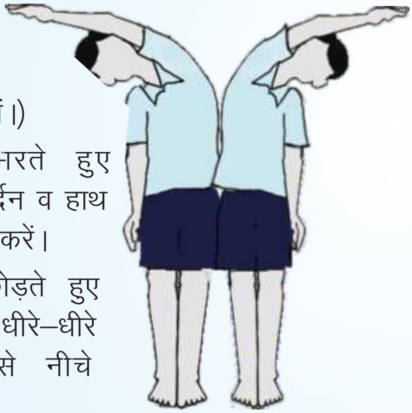

नोट : इसी प्रयोग को दाएँ हाथ से भी दोहराएँ।

लाभ

1. चेहरा तेजस्वी बनता है।
2. कमर लचीली होती है।
3. फेफड़े मजबूत होते हैं।
4. हाथ व कन्धों का दर्द दूर होता है।

आसन –4, पादहस्तासन

स्थिति : सीधे खड़े रहें। एड़ी, पंजे मिलाएँ, दोनों हाथ जंघाओं से सटे रहें।

1. श्वास भरते हुए दोनों हाथों को सामने से सिर के ऊपर सीधा तानें। हथेलियाँ ओर दृष्टि आकाश की ओर रहे। (स्थिति–अ)
2. धीरे–धीरे श्वास छोड़ते हुए अपनी कमर को सामने की ओर से झुकाएँ। दायीं हथेली को दाएँ पैर के पंजे के पास और बायीं हथेली को बाएँ पैर के पंजे के पास स्थापित करें। सिर या नाक को घुटनों पर लगाएँ। (स्थिति–ब)
3. धीरे–धीरे श्वास भरते हुए ऊपर उठें और कमर, सीना व गर्दन को सीधा करें। हाथों को पुनः ऊपर ले जाएँ। दोनों हथेलियाँ व दृष्टि आकाश की ओर रहे। (स्थिति–अ)
4. श्वास छोड़ते हुए हाथ नीचे लाएँ। दृष्टि सामने रहे।

लाभ

1. पाचन तंत्र स्वस्थ होता है।
2. कब्ज एवं मोटापा दूर होते हैं।
3. मेरुदंड लचीला होता हैं।
4. क्रोध शान्त होता है, स्मरण शक्ति बढ़ती है।

क्रमश :

कड़वा सच

चित्रकथा-

संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

किड्स कॉर्नर

– वेणु वरियाथ

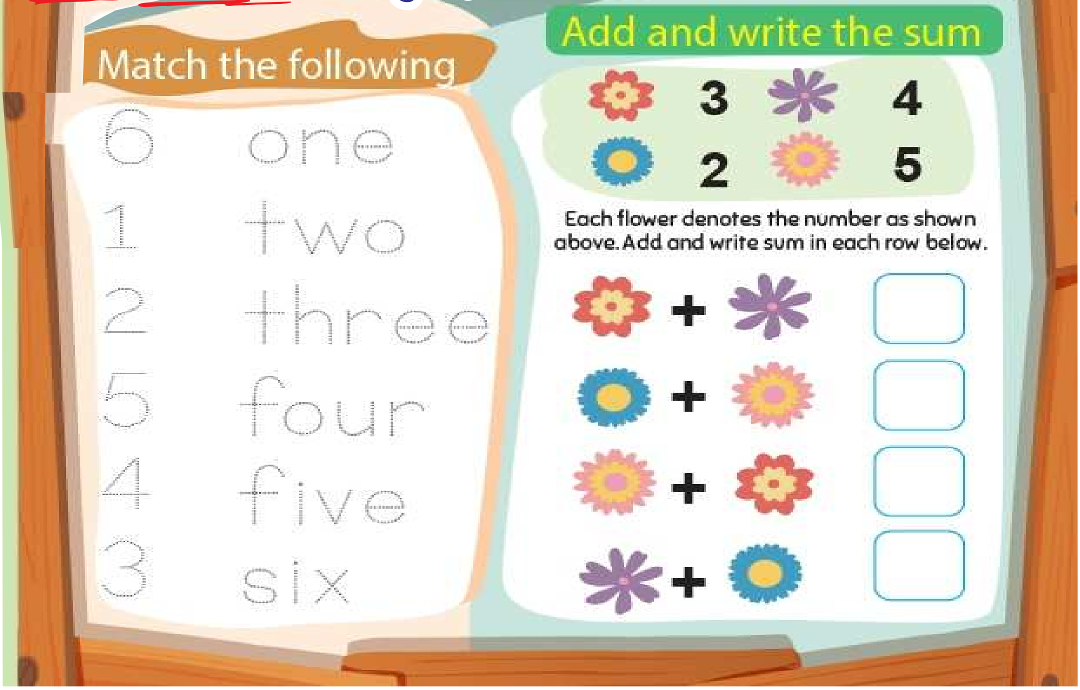

परछाई ढूँढो...

नीचे छह चित्रों की परछाई उलझन बढ़ाने के लिए अलग-अलग जगह तो कहीं दिशा बदलकर भी दी गई है, खुद खोजो और अपने दोस्तों को भी कहो वे भी दिमाग लगाएं...

– राकेश शर्मा 'राजदीप'

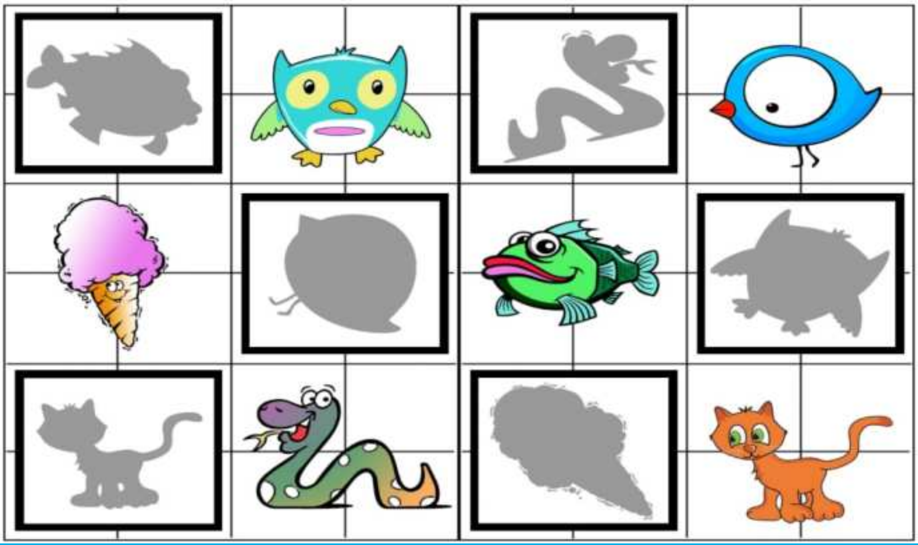

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC
International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai • Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुविभा मुख्यालय में आयोजित हो रहे

अनूठे बालोदय शिविर

अणुविभा के मुख्यालय 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' में लगने वाले आवासीय बालोदय शिविर अपना आकर्षण और महत्त्व बढ़ाते जा रहे हैं। तीन दिन के दौरान बच्चे जिस बाल-सुलभ माहौल में रहते हैं, वह उन्हें अभिभूत कर देता है और वे शिविर की अवधि कुछ दिन और बढ़ा देने का अनुरोध करते हुए भावुक हो जाते हैं। अपने जीवन को बेहतर बनाने के सूत्र वे अपने दिल में संजो कर यहाँ से विदा होते हैं। बाल शिक्षा और संस्कार की दिशा में ये शिविर पथदर्शक सिद्ध हो रहे हैं।

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

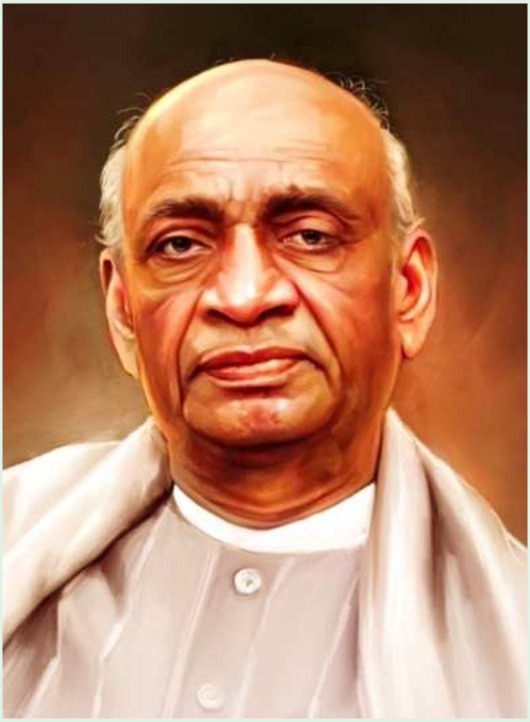

"यह हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह यह अनुभव करे कि उसका देश स्वतन्त्र है और अब उसकी स्वतन्त्रता की रक्षा करना उसका कर्त्तव्य है। हर एक भारतीय को अब यह भूल जाना चाहिए कि वह एक राजपूत है, एक सिख या जाट है। उसे यह याद होना चाहिए कि वह एक भारतीय है और उसे इस देश में हर अधिकार है पर साथ में कुछ जिम्मेदारियाँ भी हैं।"

सरदार वल्लभभाई पटेल

जन्म : 31 अक्टूबर 1875
निधन : 15 दिसम्बर 1950

सरदार पटेल के संक्षिप्त नाम से लोकप्रिय आप एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। वे एक कुशल अधिवक्ता और प्रखर राजनेता रहे, जो भारतीय राष्ट्रीय कांँग्रेस के एक वरिष्ठ नेता और भारतीय गणराज्य के संस्थापक थे। पटेल ने देश के स्वतन्त्रता संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभाई और एक एकीकृत, स्वतन्त्र राष्ट्र निर्माण में अपने बुद्धि, कौशल और चातुर्य का श्रेष्ठ उपयोग किया। इन्हें लौह पुरुष के नाम से जाना गया।